Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ
بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى ○

(सूरतुल बक़रा आयत :265)

अनुवाद: हे लोगो जो ईमान लाए हो अपने सदकों को उपकार जता कर या कष्ट देकर नष्ट न करो ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 3

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 35

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

18 ज़विल हज्जा 1439 हिजरी कमरी 30 ज़हूर 1397 हिजरी शमसी 30 अगस्त 2018 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि कश्ती नूह में हमारी शिक्षा का जो भाग है वह ज़रूर हर अहमदी को पढ़ना चाहिए बल्कि पूरी कश्ती नूह ही पढ़ें।

''वह ख़ुदा ही है जो समस्त प्रशंसाओं के योग्य है अर्थात उसके राज्य में कोई दोष नहीं और उसकी विशेषताओं के लिए ऐसी कोई प्रतीक्षा जनक स्थिति नहीं जो शेष हो जो आज नहीं बल्कि कल प्राप्त होगी। उसके राज्य की आवश्यक वस्तुओं में से कोई वस्तु भी व्यर्थ नहीं। सम्पूर्ण जगत का पोषण कर रहा है। वह बिना कर्मों के कृपा करता और कर्मों के प्रतिफल स्वरूप भी कृपा करता है। प्रतिफल और दण्ड उचित समय पर देता है। हम उसी की उपासना करते हैं और उसी से हम सहायता चाहते हैं और प्रार्थना करते हैं कि हमें समस्त पुरष्कारों के मार्ग दिखा और प्रकोप और पथ भ्रष्टता के मार्गों से दूर रख।"

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

यहां तक मसीह का बाग़ में अपने सुरक्षित रहने हेतु सारी रात प्रार्थना करना और उसका स्वीकार भी हो जाना जैसा कि इबरानियां 5 आयत 7 में लिखा है। परन्तु फिर भी ख़ुदा का उसे छुड़ाने पर शक्ति न रखना ईसाइयों के विचार में एक प्रमाण हो सकता है कि उस युग में ख़ुदा का राज्य धरती पर नहीं था, परन्तु हमने इस से कहीं बड़ी परीक्षाएं देखी हैं और उनसे मुक्ति पाई है। हम ख़ुदा के राज्य को क्योंकर नकार सकते हैं । क्या वह ख़ून का मुकद्दमा जो मेरे क़त्ल करने हेतु मार्टन क्लार्क की ओर से कप्तान डगलस की अदालत में प्रस्तुत किया गया था उस मुकद्मे से कुछ हल्का था जो मात्र धार्मिक विवाद के कारण, न कि किसी ख़ून के आरोप में यहूदियों की ओर से पैलातूस की अदालत में प्रस्तुत किया गया था। पर चूंकि ख़ुदा धरती पर भी अपना राज्य रखता है जैसा कि आकाश पर। इसलिए उसने इस मुकद्मे की मुझे पूर्व सूचना दे दी कि यह परीक्षा की घड़ी आने वाली है, सूचना दी कि मैं तुम को आरोप से बरी करूंगा। यह सूचना सैंकड़ों मनुष्यों को समय से पूर्व सुनाई गई और अंतत: मुझे बरी किया गया। यह ख़ुदा का राज्य था जिसने इस मुकद्मे से मुझे सुरक्षित रखा, जो मुसलमानों, हिन्दुओं और ईसाइयों के एकमत से मेरे विरुद्ध खड़ा किया गया था। न केवल एक बार बल्कि अनेकों बार मैंने ख़ुदा के राज्य को धरती पर देखा और मुझे ख़ुदा की इस आयत पर ईमान लाना पड़ा कि-لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

लहूमुल्कुस्मावाते वल अर्ज़ (अलहदीद-6)अर्थात धरती पर भी उसका राज्य है और आकाश पर भी और फिर इस आयत पर भी ईमान लाना पड़ा-

اِنَّمَآ اَمْرُهٗٓ اِذَآ اَرَادَ شَيْـًٔا اَنْ يَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ

इन्नमा अमरोहू इज़ा अरादा शयअन अंय्यक़ूला लहू कुन फ़यकून (यासीन83)

अर्थात सम्पूर्ण धरती और आकाश उसके आज्ञाकारी हैं। जब वह किसी कार्य करने की इच्छा करता है तो कहता है कि हो जा तो वह कार्य तुरन्त ही हो जाता है। फिर फ़रमाया-

وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰٓى اَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ

बल्लाहो ग़ालिबुनअला अमरिही वलाकिन अकसरुन्नासे ला यालमून(यूसुफ़ 22)

अर्थात अपनी इच्छा पर पूर्ण अधिकार रखता है परन्तु अधिकांश लोग ख़ुदा के प्रकोप से अनभिज्ञ हैं। इन्जील की प्रार्थना वह है जो मनुष्यों को ख़ुदा की अनुकम्पा से निराश करती है। उसके सम्पूर्ण जगत का पोषण करने, लाभ पहुंचाने और शुभ कर्मों का प्रतिफल और बुरे कर्मों पर दण्ड के नियम से ईसाइयों को स्वतंत्र करती है और उसको धरती पर सहायता देने योग्य नहीं समझती, जब तक उसका राज्य धरती पर न आए। इसकी तुलना में जो प्रार्थना ख़ुदा ने मुसलमानों को क़ुर्आन में सिखाई है वह इस तथ्य को प्रस्तुत करती है कि धरती पर ख़ुदा बेताजो तख़्त लोगों की भांति बेकार नहीं है बल्कि उसका सम्पूर्ण जगत को पोषण करने, मेहनत का फल देने, बिना मांगे देने और सम्पूर्ण अधिकार का सिलसिला धरती पर लागू है। वह अपने सच्चे उपासकों को सहायता देने की शक्ति रखता है और अपराधियों का अपने प्रकोप से विनाश कर सकता है। वह प्रार्थना यह है-

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ○ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ○ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ○ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ○ آمين۔

''अलहम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन अर्रहमानिर्रहीम मालिके यौमिद्दीन इय्याका नअबुदो व इय्याका नस्तईन इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीमा सिरातल्लज़ीना अनअमता अलयहिम ग़ैरिल मग़दूबे अलयहिम वलद्दाल्लीन'' (अलफ़ातिह:)

अनुवाद :- ''वह ख़ुदा ही है जो समस्त प्रशंसाओं के योग्य है अर्थात उसके राज्य में कोई दोष नहीं और उसकी विशेषताओं के लिए ऐसी कोई प्रतीक्षाजनक स्थिति नहीं जो शेष हो जो आज नहीं बल्कि कल प्राप्त होगी। उसके राज्य की आवश्यक वस्तुओं में से कोई वस्तु भी व्यर्थ नहीं। सम्पूर्ण जगत का पोषण कर रहा है। वह बिना कर्मों के कृपा करता और कर्मों के प्रतिफल स्वरूप भी कृपा करता है। प्रतिफल और दण्ड उचित समय पर देता है। हम उसी की उपासना करते हैं और उसी से हम सहायता चाहते हैं और प्रार्थना करते हैं कि हमें समस्त पुरष्कारों के मार्ग दिखा और प्रकोप और पथ भ्रष्टता के मार्गों से दूर रख''।

यह प्रार्थना जो सूरह फ़ातिह: में है इन्जील की दुआ के बिल्कुल विपरीत है, क्योंकि इन्जील में धरती पर ख़ुदा के वर्तमान राज्य का इन्कार किया गया है। अत: इन्जील के अनुसार न धरती पर ख़ुदा का सम्पूर्ण जगत को पोषण करने का नियम कुछ कार्य कर रहा है न कर्मों के प्रतिफल और न बिना कर्मों के कृपा, न प्रतिफल और दण्ड पर पूर्ण अधिकार का नियम ही कुछ कार्य कर रहे हैं, क्योंकि अभी धरती पर ख़ुदा का राज्य नहीं आया परन्तु सूरह फ़ातिह: से ज्ञात होता है कि धरती पर ख़ुदा का राज्य विद्यमान है । इसीलिए सूरह फ़ातिह: में राज्य की समस्त अनिवार्य वस्तुओं का उल्लेख किया गया है। स्पष्ट है कि राजा में यह विशेषताएं अनिवार्य हैं कि वह लोगों के पोषण की शक्ति रखता हो। अत: सूरह फ़ातिह: में रब्बिल आलमीन के शब्द से इस विशेषता को सिद्ध किया गया है। फिर राजा में दूसरी विशेषता यह होनी चाहिए कि उसकी प्रजा को जिन वस्तुओं की आवश्यकता है वह

शेष पृष्ठ 7 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की डेनमार्क और सवीडन का सफर, मई 2016 ई (भाग-7)

जर्मनी में जो लोग ऐसे स्थानों में काम करते थे, जहां शराब, सूअर का व्यवसाय हो रहा है, उन के बारे में हिदायत दी थी कि उन से चन्दा नहीं लेना। उन्हें वहां काम करने मजबूरी है। जमाअत की कोई बाध्यता नहीं है कि उन से चन्दा लें आपातकालीन स्थिति उन काम करने वाले लोगों की होगी। जमाअत के लिए कोई मजबूरी नहीं कि उन से चन्दा ले।

लोगों के घरों में जाएं। और उन को ध्यान दिलाएं और उन को बताएं के मेरे ज़िम्मे यह काम लगाया गया है कि मैं चन्दों की तरफ और उस के स्तर के तरफ ध्यान दिलाऊं। आप आय के अनुसार चन्दा अदा नहीं कर रहे तो अपना चन्दा सहीह कर लें। मेरा काम चन्दा के स्तर बढ़ाने की तरफ ध्यान दिलाना है अत: धैर्य तथा सब्र के साथ ध्यान दिलाते रहें।

आप अपने देश से प्यार करें और हमारे विश्वास के अनुसार देश से प्यार करना आपके ईमान का एक हिस्सा है। यदि एक पाकिस्तानी या अफ्रीकी जो स्वीडन में स्थानांतरित हो गया है और यहां आया है और स्वीडिश नागरिकता प्राप्त कर ली है, तो फिर उसे स्वीडन से प्यार करना होगा। उसे देश के प्रति वफादार होना चाहिए। यदि इस देश पर दुश्मन की तरफ से हमला किया जाता है, तो इसे देश की फौज में शामिल हो कर मुकाबला करना होगा। उसे देश के विकास के लिए भूमिका निभानी होगी। उसे उस देश के लिए शोध करनी होगी। उसे इस देश के लोगों से प्यार करना होगा। उसे कानूनों का पालन करना होगा और उन सभी कानूनों का पालन करना होगा जो संसद द्वारा लागू किए गए हैं अत: यह एकीकरण है।

नेशनल मज्लिस आमला हालेंड की हुज़ूर अनवर से मुलाकात, स्वीडिश टेलीविजन का हुज़ूर अनवर से इनट्रविय़ू

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)
(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

नेशनल मज्लिस आमला हालेंड की हुज़ूर अनवर से मुलाकात

मुलाकातों का यह प्रोग्राम 12 बजकर 35 मिनट तक जारी रहा इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार नेशनल मज्लिस आमला हालेंड डेनमार्क की हुज़ूर अनवर के साथ मुलाकात की।

हुज़ूर अनवर हाल में तशीरफ लाए दुआ करवाई और मीटिंग शुरू हुई।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने जनरल सैक्रेटरी साहिब से मज्लिसों के बारे में पूछा जनरल सैक्रेटरी साहिब ने बताया कि हमारे सात क्षेत्र हैं और हमारे तजनीद 517 है और आज एक बच्ची पैदा हुई है और हमारी तजनीद 518 हो गई है। नियमित रिपोर्ट सभी क्षेत्रों से नहीं मिलती हैं। माल और तरबियत की रिपोर्टें विभागों के अनुसार नियमित आती हैं।

सैक्रेटरी प्रकाशन ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि किताब WORLD CRISIS AND THE PATHWAY TO PEACE का डेनिश अनुवाद प्रकाशित किया गया है। इसी प्रकार, दो लाख फ्लेयरस प्रकाशित किए गए हैं। उनमें से 30,000 वितरित किए गए हैं। हुज़ूर अनवर ने फरमाया आप ख़ुद्दाम को दें अंसार को दें यह बंट जाएंगी

सेक्रेटरी इशाअत ने कहा कि हमने पुस्तक मेले में भाग लिया है और वहां भी किताब WORLD CRISIS वितरित की है। और कल रात फंगशन में मेहमानों को भी दी है।

नेशनल सैक्रेटरी वक्फे नौ ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि वाक्फीन की कुल संख्या 38 है। इनमें से ग्यारह 15 साल से ऊपर है और 14 लड़के लड़कियां पंद्रह वर्ष से कम हैं और बाकी पांच वर्ष से कम आयु के हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि वक्फे नौं का सलेबस मौजूद है। अब तो 21 साल तक का भी स्लेबस तैयार हो चुका है। यह सेलेबस प्राप्त करें।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि पंद्रह साल से ऊपर हैं उनसे बांड भरवाएं कि वे वक्फ के लिए तैयार हैं और जब यह बच्चे अपनी पढ़ाई पूरी करें तो पढ़ाई पूरी करने के बाद फिर अपना वक्फ का फार्म भरें कि हम ने अपनी शिक्षा प्राप्त कर ली है और अब हम नियमित रूप से अपने जीवन को समर्पित करना चाहते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया आप वक्फे नौ के सिलेबस लजना को भी दें लजना वाकफात नौ की कक्षा लजना के द्वारा होगी। प्रोग्राम आप का होगा परन्तु कक्षा लज्ना की होगी। लज्ना की कक्षा मर्द नहीं लेंगे। आप लज्ना को प्रोग्राम दें। आप ने उन को अभी तक कोई प्रोग्राम नहीं दिया और निसाब नहीं दिया। आप प्रोग्राम देंगे तो वे कक्षाए आरम्भ करेंगी।

नेशनल सेक्रेटरी समई तथा बसरी ने रिपोर्ट जमा करते हुए बताया कि हमने एक नई वेबसाइट लॉन्च की है और प्रेस कॉन्फ्रेंस लोड की हैं। शुक्रवार को ख़ुत्बा के अनुवाद की प्रणाली का प्रबंध इसी विभाग ने किया था । आजकल, एम.टी.ए इंटरनेशनल की टीम के साथ काम कर रहे हैं।

नेशनल सैक्रेटरी जायदाद को हुज़ूर अनवर ने हिदायत देते हुए फरमाया जमाअत की जो भी जायदादें है यहां कोपेनहेगन में नाकास्को में हैं मिशन हैं और अब मस्जिद के लिए ज़मीन ली हुई है इन सब का रिकार्ड और हिसार रखें।

राष्ट्रीय सैक्रेटरी वक्फे जदीद ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि जो सारा साल गुज़रा है इस में हमारा वादा 74 हज़ार करोंज़ था और वसूली 86 हज़ार करोंज़ हुई थी।

हुज़ूर अनवर ने पूछा कि शामिल होने वालों की संख्या क्या है इस पर सेक्रेटरी वक्फे जदीद ने बताया कि शामिल होने वाले की संख्या 389 है जब कि साल 2013 में शामिल होने वालों की संख्या 332 थी।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया : बच्चों को भी इसमें शामिल कर लें। लजना को भी जोड़ें। मुख्य उद्देश्य यह है कि बच्चों को आदत डालें कि रकम से अधिक अधिक चन्दों का महत्व होना चाहिए और चन्दों का महत्त्व उस समय होगा जब आप बच्चों को भी जोड़ना शुरू करेंगे। हुज़ूर अनवर ने फरमाया: अपने चन्दे का स्तर बढ़ाएं।

राष्ट्रीय सैक्रेटरी तहरीक जदीद ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कहा कि हमारी तहरीक जदीद का वादा एक लाख 27 हज़ार रुपए था और वसूली एक लाख 25 हज़ार करोंज़ हुई है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, "आपको उचित रूप से याद दिलाना चाहिए था। सैक्रेटरी ने कहा कि शामिल होने वालों की संख्या 469 है।

इन्टरनल आडीटर ने बताया कि मैं हर महीने आडिट कर लिया है। हुज़ूर अनवर ने फरमाया: यहां तो भर बनाने के काम हुए हैं इस के लिए केन्द्र से कितनी राशि ली गई है और कहां से पैसा आया है। इस पर, आंतरिक लेखा परीक्षक ने जवाब दिया

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

जंग हज़रत मुन्ज़िर बिन मुहम्मद अन्सारी और हज़रत हातिब बिन बलता रिज़वानुल्लाह अलैहिम के जीवन के हालात और सीरत के विभिन्न पहलुओं का ईमान वर्धक वर्णन।

अल्लाह तआला इन सहाबा की उच्च विशेषताओं का हमें भी वारिस बनाए और इन के स्तर ऊंचे करता चला जाए।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 27 जुलाई 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ
اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

सहाबा के उल्लेख में, मैं आज दो सहाबा का उल्लेख करूंगा। पहला हज़रत मुनवर बिन मुहम्मद अंसारी हैं।

हज़रत मुन्ज़िर बिन मुहम्मद बनू जहजबा कबीला से संबंधित थे। मदीना तशरीफ़ लाने के बाद आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मुन्ज़िर बिन मुहम्मद और तुफ़ैल बन हारिस के बीच भाईचारा स्थापित फरमाया था।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 248 मुन्ज़िर बिन मुहम्मद मुद्रित दारुल अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई)

जब हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ि अल्लाह हज़रत हातिब बिन अबी बलत: और हज़रत अबु सबरह बिन अबी रुहम मक्का से हिजरत करके मदीना आए तो उन्होंने हज़रत मुन्ज़िर बिन मुहम्मद के घर निवास किया।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 55 ज़ुबैर बिन अलअवाम, पृष्ठ 61 हातिब बिन अबी बलत:, पृष्ठ 215 अबू सबरह बिन अबी रूहम मुद्रित दारुल अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई)

हज़रत मुन्ज़िर जंग बद्र और उहद में शामिल हुए और बेअरे माऊना की घटना में शहीद हुए।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 248 मुन्ज़िर बिन मुहम्मद मुद्रित दारुल अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई)

बेअरे माऊना का पहले भी एक दो जगह सहाबा की घटनाओं में उल्लेख हो चुका है। अब मैं इसका संक्षिप्त उल्लेख करता हूं। हज़रत मुन्ज़िर की शहादत की जो बारे में जो विवरण सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने लिखा है उस में यह लिखा है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सफर 4 हिजरी में हज़रत मुन्ज़िर बिन अमर अंसारी की इमारत में सहाबा की एक जमाअत रवाना की। ये लोग आमतौर पर अंसार में से थे। उनकी संख्या 70 थी। वे सभी कारी थे। ये कुरआन पढ़ने वाले थे। जो दिन-प्रतिदिन लकड़ी एकत्र करते थे, उन्होंने जंगल से ले जाकर बेचते और फिर अपना पेट पालते। रात का बहुत सा हिस्सा इबादत में व्यतीत करते थे। जब यह लोग उस स्थान पर पहुंचे जो एक कुऐं बेअरे माऊना के नाम से मशहूर था तो उनमें से एक व्यक्ति हराम बन मिलहान जो अनस बिन मालिक के मामू थे आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ से इस्लाम की दावत का पैग़ाम लेकर कबीला आमिर के रईस और अबो बराय के भतीजे आमिर आमिर बिन तुफ़ैल के पास आगे गए। बाकी सहाबी पीछे रहे। जब हराम बिन मलहान आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दूत के रूप में आमिर बिन तुफ़ैल और उनके सहाबा के पास पहुंचे तो उन्होंने शुरू में तो मुनाफिकाना (पाखंडी) रूप में बड़ी आओ भगत की लेकिन जब वे संतुष्ट होकर बैठ गए और इस्लाम का संदेश पहुंचाने लगे और इस्लाम का प्रचार करने लगे तो उनमें से कुछ दुष्टों ने किसी व्यक्ति को इशारा किया और उसने निर्दोष दूत को पीछे से भाले का वार कर वहीं ढेर कर दिया। जब हराम बिन मलहान घायल हुए तो उनकी ज़बान पर ये शब्द थे कि "अल्लाह अकबर फुज़तो व रब्बलि कअबते" कि अल्लाह अकबर रब्बे काबा की कसम में तो अपनी मुराद को पहुंच गया। आमिर बन तुफ़ैल ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दूत की हत्या पर ही संतोष नहीं किया बल्कि उसके बाद अपने कबीले बनू आमिर के लोगों को उकसाया कि वे मुसलमानों की शेष दल पर हमला करें लेकिन उन्होंने इस बात से इनकार किया और कहा कि हम अबू बराअ की ज़िम्मेदारी के होते हुए मुसलमानों पर हमला नहीं कर सकते उस पर आमिर ने कबीला बनू सलीम में से बनू रिअल और ज़कवान और उसय्या आदि (अर्थात वही लोग जो बुख़ारी की हदीस के अनुसार आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास प्रतिनिधिमंडल बन कर आए थे कि हमें कुछ लोग भेजें जो हमें तब्लीग़ करें।) अपने साथ लिया और ये सब लोग मुसलमानों की इस कमज़ोर तथा असहाय जमाअत पर हमला करने लगे। मुसलमानों ने जब इन बर्बर वहशियों को अपनी ओर आते देखा तो उनसे कहा कि हमें तुम से कोई सम्बन्ध नहीं है। हम कोई लड़ाई के लिए नहीं आए। हम तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से एक काम के लिए आए हैं और हम तुम से लड़ने का कोई इरादा नहीं रखते। लेकिन उन्होंने एक नहीं सुनी और सब को तलवार के घाट उतार दिया। उन सहाबियों में से जो उस वक्त मौजूद थे केवल एक व्यक्ति बचा जो पैर से लंगड़ा था और पहाड़ी के ऊपर चढ़ गया था। इस साहिब का नाम काबा बिन ज़ैद था। (इनका ज़िक्र हो चुका है।) कुछ और रिवायतों से पता लगता है कि काफिरों ने उन पर भी हमला किया था जिससे वह घायल हो गए थे और काफिर उन्हें मृत समझकर छोड़ गए थे लेकिन वास्तव में उनमें जान बाकी थी और वह बाद में बच गए।

सहाबा की इस जमाअत में दो व्यक्ति अर्थात् अम्र बिन उमय्या ज़मरी और मुन्ज़िर बिन मुहम्मद उस समय ऊंट आदि चराने के लिए अपनी जमाअत से अलग होकर इधर उधर गए हुए थे। जब उन्होंने दूर से अपने डेरे की तरफ देखा, तो देखा कि पक्षियों के झुण्ड के झुण्ड हवा में उड़ रहे थे। वह इस रेगिस्तान की निशानी को ख़ूब समझते थे। (जब रेत में पक्षी ऐसे झुंड के झुंड फिर रहे हों तो मतलब है कि नीचे उनके लिए भोजन की कोई व्यवस्था है।) वह तुरंत समझ गए कि कोई लड़ाई हुई है। जब वापस आए और देखा तो अपराधियों का कत्ल करना आंखों के सामने था। दूर से ही इस नज़ारा को देख कर उन्होंने विचार किया कि अब हमें क्या करना चाहिए। एक ने कहा कि हमें यहाँ से तुरंत निकल जाना चाहिए और मदीना पहुंचकर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सूचना देनी चाहिए। लेकिन दूसरे ने इस राय को स्वीकार नहीं किया और कहा कि मैं तो इस जगह से भाग कर नहीं जाऊँगा। जहाँ हमारा अमीर मुन्ज़िर बिन आमिर शहीद हुआ है वहीं हम लड़ेंगे। इसलिए वह भी आगे बढ़े और लड़कर शहीद हुए।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए पृष्ठ 518-519) अर्थात मुन्ज़िर बिन मुहम्मद जो ऊंट चराने गए हुए थे जब वह आए तो उन्होंने भी दुश्मन का मुकाबला किया और वहीं शहीद हुए। इस तरह उनकी शहादत 4 हिजरी में हुई।

दूसरे सहाबी हज़रत हातिब बिन अबी बलत: हैं। उनका संबंध कबीला लख़म से था। हज़रत हातिब बिन अबी बलत: बनू असद के सहयोगी थे। उनकी कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह थी और यह भी कहा जाता है कि आप की कुन्नियत अबू मुहम्मद थी। हज़रत हातिब बिन अबी बलत: यमन वाले थे। आसिम बिन उमर रिवायत करते हैं कि जब हज़रत हातिब बिन अबी बलत: और आप के ग़ुलाम सअद ने मक्का से मदीना की तरफ़ हिजरत की तो दोनों हज़रत अल मुन्ज़िर बिन मुहम्मद बिन अक़बा के पास रहे। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत हातिब बिन अबी बलत: और हज़रत रुख़ैलह बिन खालिद के बीच भाईचारा का रिश्ता कायम किया और एक रिवायत में यह भी है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उवैम बिन साद और हज़रत हातिब बिन अबी बलत: के बीच भाईचारा का संबंध स्थापित किया। हज़रत हातिब बिन अबी बलत: जंग बद्र, जंग उहद, जंग

ख़ंदक सहित सभी जंगों में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल रहे। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपना एक तब्लीग़ी ख़त देकर मकोकस शाह अलेक्जेंड्रिया के पास भेजा। हज़रत हातिब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के तीर अंदाज़ों में से थे। यह भी कहा गया है कि हज़रत हातिब बिन अबी बलत: जाहिलियत के दौर में क़ुरैश के सर्वोत्तम घोड़ सवार और शायरों में से थे। कुछ कहते हैं कि हज़रत हातिब बिन अबी बलत: उबैदुल्लाह बिन हमीद दास थे और आप ने अपने मालिक से मकातबत करके स्वतंत्रता प्राप्त कर ली थी और मकातबत राशि उन्होंने फतेह मक्का के दिन अदा की थी।

(अदसुलग़ाबह जिल्द 1 पृष्ठ 491 हातिब बिन अबी बलत: मुद्रित दारुल फिक्र बैरूत 2003), (अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 61 मुद्रित दारुल अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई),(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3, पृष्ठ 242 मुद्रित दारुल अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई), (असाब: फी तमीज़िज़सहाबा जिल्द 2 पृष्ठ 4-5 हातिब बन बिन बलत: मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1995 ई)

हज़रत उम्मे सलमा बयान फ़रमाती हैं कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें उन की शादी के शादी का जो संदेश देकर मेरे पास भेजा था वह हातिब बिन अबी बलत: को भेजा था।

(सही मुस्लिम किताबुल जनाईज़ जिल्द 4 पृष्ठ 80 हदीस 1516 अनुवादक नूर फाउंडेशन)

एक रिवायत में आता है हज़रत अनस बिन मलिक ने हातिब बिन अबी बलत: से सुना कि वह कहते थे कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उहद के दिन मेरी तरफ ध्यान दिया। जंग के बाद जब ज़रा हालात बेहतर हुए तो करीब गए। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तकलीफ में थे। हज़रत अली के हाथ में पानी का बर्तन था और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस पानी से अपना चेहरा धो रहे थे। हातिब ने आप से पूछा कि आपके साथ यह किस ने किया है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया उतबह बिन अबी वक़ास ने मेरे चेहरे पर पत्थर मारा है। हज़रत हातिब कहते हैं कि मैंने कहा कि मैंने यह आवाज़ पहाड़ी पर सुनी थी कि आं हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कत्ल कर दिए गए हैं और इस आवाज़ को सुनकर इस स्थिति में यहां आया हूं मानो कि मेरी रूह निकल रही है। मेरी जान निकल रही है। लगता है शरीर में जान नहीं। हज़रत हातिब ने फिर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से निवेदन किया कि उतबह कहां है? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक ओर इशारा किया कि अमुक तरफ है। हज़रत हातिब उसकी तरफ गए। वह आदमी छुपा हुआ था यहाँ तक कि आप इसे काबू में करने में सफल हो गए। हज़रत हातिब ने तलवार के वार से उसका सिर उतार दिया। फिर आप उसका सिर और औज़ार और उसका घोड़ा पकड़कर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास ले आए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वह सारा कुछ सामान हज़रत हातिब को दे दिया और हज़रत हातिब के लिए दुआ की। आपने फ़रमाया अल्लाह तुझ से प्रसन्न हो। अल्लाह तुझ से प्रसन्न हो। (दो बार कहा।)

(किताब अस्सुनन अल्कुब्रा लिल्बहीकी हदीस 13041 भाग 6 पृष्ठ 504 मकतबा अर्रुशद नाशेरून 2004 ई)

हज़रत हातिब बिन अबी बलत: की वफात 30 हिजरी में मदीना में 65 साल की उम्र में हुई। हज़रत उसमान ने आप की नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 61 मुद्रित दारुल अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई)

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो पत्र मकोकस को भेजा था इस के विवरण में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने लिखा है कि यह तीसरा पत्र था जो बादशाहों को भेजा गया।

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन से हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए पृष्ठ 818) हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी ने उल्लेख किया कि चौथा पत्र था।

(दीबाचा तफसीर कुरआन, अन्वारुल उलूम जिल्द 20 पृष्ठ 321)

बहरहाल इस्लाम का संदेश पहुंचाने के लिए प्रमुखों और राजाओं को जो पत्र लिखे गए थे उनमें से एक पत्र मकोकस मिस्र के बादशाह के नाम भी था जो कैसर के अधीन मिस्र और अलेक्जेंड्रिया का बादशाह अर्थात हाकिम था और कैसर की तरह ईसाई धर्म का मानने वाला था। उसका व्यक्तिगत नाम जुरैज बिन मीना था और वह और उसकी प्रजा कब्ती कौम से संबंध रखती थी। यह पत्र आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबी हातिब बिन अबी बलत: के हाथ भिजवाया। और इस पत्र के शब्द ये थे:

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مِنۡ مُحَمَّدٍ عَبۡدِ اللّٰہِ وَرَسُوۡلِہٖ اِلَی الۡمُقَوۡقَسِ عَظِیۡمِ الۡقِبۡطِ۔ سَلَامٌ عَلٰی مَنِ اتَّبَعَ الۡھُدٰی۔ اَمَّا بَعۡدُ فَاِنِّیۡ اَدۡعُوۡکَ بِدِعَایَۃِ الۡاِسۡلَامِ اَسۡلِمۡ تُسۡلَمۡ یُؤۡتِکَ اللّٰہُ اَجۡرَکَ مَرَّتَیۡنِ۔ فَاِنۡ تَوَلَّیۡتَ فَعَلَیۡکَ اِثۡمُ الۡقِبۡطِ۔ یٰۤاَھۡلَ الۡکِتَابِ تَعَالَوۡا اِلٰی کَلِمَۃٍ سَوَآءٍۢ بَیۡنَنَا وَبَیۡنَکُمۡ اَنۡ لَّا نَعۡبُدَ اِلَّا اللّٰہَ وَلَا نُشۡرِکَ بِہٖ شَیۡئًا وَّلَا یَتَّخِذَ بَعۡضُنَا بَعۡضًا اَرۡبَابًا مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰہِ فَاِنۡ تَوَلَّوۡا فَقُوۡلُوا اشۡھَدُوۡا بِاَنَّا مُسۡلِمُوۡنَ۔

अर्थात मैं अल्लाह के नाम के साथ शुरू करता हूं जो बिना मांगे रहम करने वाला है और कर्मों का सर्वोत्तम बदला देने वाला है। यह पत्र मुहम्मद ख़ुदा के बन्दे और उस के रसूल की तरफ से कबतियों के रईस मकोकस के नाम है। सलामती हो उस आदमी पर जो हिदायत स्वीकार करता है इस के बाद मिस्र के बादशाह! मैं आप को इस्लाम की तरफ बुलाता हूं मुसलमान हो कर ख़ुदा की सलामती को स्वीकार करो अब केवल यही मुक्ति का मार्ग है। अल्लाह तआला आप को दोगुना बदला दे। परन्तु यदि आप ने मुंह मोड़ा तो आप (के अपने गुनाह कि) कब्तियों का गुनाह भी आप के सिर होगा। और हे अहले किताब उस कलिमा की तरफ आ जाओ जो मेरे और तुम्हारे मध्य एक जैसा है अर्थात हम ख़ुदा के सिवा किसी की इबादत नहीं करेंगे और किसी सूरत में ख़ुदा का कोई शरीक न ठहराऐंगे और ख़ुदा को छोड़ कर अपने में से किसी को अपना आक़ा और ज़रूरतों को पूरा करने वाला नहीं समझेंगे। फिर अगर उन लोगों ने मुंह मोड़ा तो उन से कह दो गवाह रहो कि हम तो बहरहाल एक ख़ुदा की इबादत करने वाले हैं।

यह पत्र जो आप ने उस बादशाह को भेजा था। जब हातिब बिन अबी बलत: अलेक्जेंड्रिया पहुंचे तो मकोकस के नौकर से मिल कर उस की सेवा में हाज़िर हुए और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ख़त पेश किया। मकोकस ने ख़त पढ़ा और फिर हातिब बिन अबी बलत: से मज़ाक के रंग में कहा कि अगर तुम्हारा यह साहिब (अर्थात आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) वास्तव में ख़ुदा का बन्दा है(तो इस ख़त के भेजने के स्थान पर) उस ने मेरे ख़िलाफ ख़ुदा से यह दुआ क्यों न की कि ख़ुदा मुझे उस पर विजयी कर दे।(अर्थात आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उस वाली पर विजयी कर दे।) हातिब ने जवाब दिया कि अगर यह आरोप ठीक है जो तुम कह रहे हो तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर भी पड़ता है कि उन्होंने अपने विरोधियों पर इस प्रकार की दुआ क्यों न की। फिर हातिब ने मकोकस को नसीहत करते हुए कहा कि आप ध्यान करें क्योंकि इस से पहले आप के इसी देश में एक आदमी (फिरऔन) गुज़र चुका है जो यह दावा करता था कि वह सारे संसार का रब्ब है और सब से बड़ा हाकिम है जिस पर ख़ुदा ने उस को इस प्रकार पकड़ा कि वह अगले तथा पिछले लोगों के लिए नसीहत बन गया। अत: मैं आप की भलाई के लिए निवेदन कर रहा हूं कि आप दूसरों की अवस्था से नसीहत पकड़ें और इस प्रकार न बनें कि दूसरे लोग आप की हालत से नसीहत पकड़ें। वाली ने देखी कि जब इतने साहस से बोल रहे हैं तो कहने लगा कि बात यह है कि हमें पहले से एक धर्म प्राप्त है इस लिए जब तक हमें इस से बेहतर धर्म प्राप्त नहीं हो जाता हम इसे नहीं छोड़ सकते। हातिब रज़ि अल्लाह ने जवाब दिया कि इस्लाम वह धर्म है जो सब धर्मों से ग़नी कर देता है(आख़री धर्म है और सब धर्म इस में सिमट गए हैं।) परन्तु वह निसन्देह आप को इस बात से नहीं रोकता कि आप हज़रत मसीह नासरी पर भी ईमान लाएं। बल्कि वह सब सच्चे नबियों पर ईमान लाने की नसीहत करता है। जिस प्रकार हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने हज़रत ईसा अलैहिस्सालम की ख़ुश ख़बरी दी थी इस प्रकार हज़रत ईसा अलैहिस्सालम ने हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में ख़ुश ख़बरी दी है। इस पर मकोकस कुछ सोच कर खामोश हो गया मगर इस के बाद दूसरी मज्लिस में जब कि बड़े बड़े पादरी भी मौजूद थे मकोकस ने हातिब से फिर कहा कि मैंने सुना है कि तुम्हारे नबी अपने वतन से निकाले गए थे तो जब तुम्हारे नबी अपने वतन से निकाले गए थे तो फिर उन्होंने उस अवसर पर अपने निकालने वालों को लिए बददुआ क्यों न की। ताकि वे लोग हलाक कर दिए जाते। हातिब ने यह बात सुनी तो उस वाली को जवाब दिया कि हमारे नबी तो केवल वतन से निकाले गए थे मगर आप के हज़रत मसीह को पकड़ कर यहूदियों ने तो सूली पर ही चढ़ा दिया था और मारना चाहा था फिर भी वह अपने विरोधियों के ख़िलाफ बददुआ कर के उन्हें हलाक न कर सके। मकोकस ने जब जवाब सुना तो प्रभावित हुआ। कहने लगा कि निसन्देह तुम एक बुद्धिमान इंसान हो और एक बुद्धिमान इंसान की तरफ से राजदूत बन कर आए हो। इस पर कहने लगा कि मैंने तुम्हारे नबी के मामले में ग़ौर किया है कहने लगा कि मैं समझता हूं कि उन्होंने वास्तव में किसी बुरी बात की शिक्षा नहीं दी। और न किसी

अच्छी बात से रोका है। फिर उस ने आ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ख़त एक हाथी दांत की डिबिया में रख कर उस पर अपनी मुहर लगाई और उस की सुरक्षा कि लिए अपने घर की एक लड़की के सुपुर्द कर दिया। बहरहाल इस ख़त से उस ने सम्मान का व्यवहार किया। इस के बाद मकोकस ने अपने एक अरबी भाषा लिखने वाले कातिब को बुलाया और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नाम लिखा और ख़त लिखवाकर हातिब के सुपुर्द किया। इस ख़त का अनुवाद यह है कि ख़ुदा के नाम के साथ जो रहमान तथा रहीम है। यह ख़त मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह(सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के नाम कब्तियों के रईस मकोकस की तरफ से है आप पर सलामती हो। मैंने आप का ख़त तथा आप की अभिलाषा को समझा। और आप की दावत पर ग़ौर किया। मैं यह ज़रूर जानता था कि एक नबी प्रकट होने वाला है परन्तु मेरा विचार था कि वह शाम देश में प्रकट होगा।(न कि अरब में) और मैं आप के राजदूत के साथ सम्मान के साथ पेश आया हूं और मैं इस के साथ दो लड़कियां भिजवा रहा हूं जिन्हें कब्ती क़ौम में बहुत सम्मान प्राप्त है। ये उच्च ख़ानदान की लड़कियां हैं और मैं कुछ कपड़े भी भिजवा रहा हूं और आप की सवारी के लिए खच्चर भी भिजवा रहा हूं। वस्सलाम। इस के बाद उस के हस्ताक्षर।

इस पत्र से जाहिर है कि मकोकस मिस्र आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दूत के साथ सम्मान से पेश आया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दावे में एक हद तक रुचि भी ली लेकिन बहरहाल उसने इस्लाम स्वीकार नहीं किया और दूसरी रिवायतों से ऐसा लगता है कि वह ईसाई धर्म पर मर गया। इसकी वार्तालाप के माध्यम से यह पता लगता है कि वह बेशक धर्म में दिलचस्पी लेता था लेकिन इस मामले में जो आवश्यक गंभीरता आवश्यक थी वह उसे प्राप्त नहीं थी। इसलिए इस ने ज़ाहिर में सम्मान का रंग रखते हुए भी आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दावत को टाल दिया।

जो दो लड़कियों मकोकस ने भिजवाई थी उनमें से एक का नाम मारिया और दूसरी का नाम सीरियन था और यह दोनों आपस में बहनें थीं और जैसा कि मकोकस ने अपने पत्र में लिखा था वह कब्ती क़ौम से थीं और यह वही क़ौम है जिस से ख़ुद मकोकस का संबंध था और यह लड़कियां आम लोगों में से नहीं थी बल्कि मकोकस की अपनी लेखनी के अनुसार उन्हें कब्ती क़ौम में बड़ा दर्जा प्राप्त था। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने लिखा है कि दरअसल मालूम होता है कि मिस्र में यह पुराना दस्तूर था कि अपने ऐसे मेहमानों को जिनके साथ वे संबंध बढ़ाना चाहते थे संबंध के लिए अपने परिवार या अपनी क़ौम की शरीफ लड़कियां प्रदान कर देते थे ताकि उन से शादी हो जाए। आप लिखते हैं कि इसलिए जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम मिस्र में पधारे तो मिस्र के रईस ने उन्हें भी एक शरीफ लड़की यानी हज़रत हाजरा रिश्ता के लिए पेश की थी जो बाद में हज़रत इस्माईल और उनके द्वारा कई अरब क़बीलों की मां बनी। बहरहाल मकोकस की भिजवाई हुई लड़कियों मदीना पहुँचने पर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मारिया से तो ख़ुद शादी की और उसकी बहन सीरियन की अरब के मशहूर शायर हस्सान बिन साबित से शादी करा दी। यह मारिया वही मुबारक महिला हैं जिनके गर्भ से आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बेटे हज़रत इब्राहीम पैदा हुए जो नबुव्वत के समय की मानो एकमात्र संतान थी। यह उल्लेखनीय भी है कि मदीना पहुंचने से पहले ही ये दोनों लड़कियां हातिब बिन अबी बलत: की तब्लीग़ से मुस्लमान बन गईं।

जो खच्चर इस अवसर पर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तोहफे में आई थी। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस पर प्राय: सवारी फरमाया करते थे और ज़ंग हुनैन में भी यही सवारी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास थी।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए पृष्ठ 818 से 821)

जो पत्र मकोकस को लिखा गया था इसके बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो ने यह बात अधिक वर्णन की है है कि यह पत्र वही था(इसी प्रकार का ख़त था जिस के शब्द यह थे) जो रोम के राजा को लिखे गए थे। केवल अंतर है कि यह लिखा था कि अगर तुम न माने तो रोम की प्रजा के गुनाहों का बोझ भी तुम्हारे सिर पर होगा और इस में यह था कि कब्तियों के गुनाहों का बोझ तुम पर होगा। जब हातिब रज़ि अल्लाह तआला मिस्र पुहंचे, तो उस समय मकोकस अपनी राजधानी में नहीं था। बल्कि अलेक्जेंड्रिया में थे। हातिब अलेक्जेंड्रिया गए, जहां राजा ने समुद्र तट पर एक मज्लिस लगाई हुई थी। हातिब भी एक नाव में (हो सकता है कि वहां कोई द्वीप हो) सवार हो कर उस स्थान पर गए और चूंकि उस स्थान पर पहरा था इस लिए ज़ोर ज़ोर से आवाज़ें देनी शुरू कर दीं। बादशाह ने आदेश दिया कि उस आदमी को लाया जाए और फिर उन की सेवा में पेश कर दिया गया।

फिर आप ने यह भी लिखा कि हातिब ने मकोकस को यह भी कहा है कि "ख़ुदा की कसम मूसा ने ईसा के बारे में इस प्रकार की ख़बरें नहीं दीं। जिस प्रकार ने ईसा अलैहिस्सलाम ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में दी हैं। और हम तुम्हें उसी मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में बुलाते हैं। जिस प्रकार तुम लोग यहूदियों को ईसा की तरफ बुलाते हो। फिर कहने लगे कि प्रत्येक नबी की एक उम्मत होती है और उस का फर्ज़ होता है कि उस की आज्ञा पालन करे। अत: जब तुम ने उस नबी का ज़माना पाया जिस को अल्लाह तआला ने सारे संसार के लिए नबी बना कर भेजा है। तो तुम्हारा फर्ज़ है कि उस को स्वीकार करो। और हमारा धर्म तुम को मसीह के अनुसरण से नहीं रोकता बल्कि हम तो दूसरों को भी आदेश देते हैं कि मसीह पर ईमान लाओ।"

(दीबाचह तफ्सीरुल-कुरआन, अनवारुल उलूम जिल्द 20 पृष्ठ 322)

ये वह लोग थे जो बड़े साहस और समझदारी से तब्लीग का दायित्व का पालन करते थे। कोई हाकिम है या राजा है या बादशाह है किसी के सामने भी उन को भय नहीं हुआ।

फिर मक्का वालों की तरफ महिला के पत्र ले जाने की जो घटना आती है यह हातिब बिन अबी बलत: ही थे जिन्होंने इस महिला के हाथ मक्का वालों के लिए पत्र भेजा था और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आने की सूचना दी थी। इसलिए रिवायत में आता है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब फत्ह मक्का के लिए लश्कर के साथ कूच किया तब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक सहाबी हज़रत हातिब बिन अबी बलत: ने मक्का के क़ुरैश के लिए एक महिला के हाथ पत्र भेजा। हज़रत सय्यद ज़ैनुल आबेदीन शाह साहिब बुखारी की व्याख्या में लिखा है कि

"इस घटना के विस्तार से पहले इमाम बुखारी ने यह कुरआन की आयत लिखी है कि لَا تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ أَوْلِيَاءَ हे लोगो जो ईमान लाए हो मेरे दुश्मन और अपने दुश्मन को कभी दोस्त न बनाओ। हज़रत अली रज़ि अल्लाह तआला ने रिवायत है कि उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे जुबैर और मकदाद बिन असवद को भेजा। आपने फ़रमाया तुम चले जाओ जब तुम रौज़ा ख़ाख़ एक जगह है वहां पहुंचो तो वहां एक सवार शत्रु महिला होगी और उसके पास एक पत्र है कि तुम वह पत्र इससे लो। हम चल पड़े हमारे घोड़े सरपट दौड़ते हुए हमें ले गए। जब हम रौज़ा ख़ाख़ तक पहुंचे हैं, तो हम देखते हैं कि वहाँ एक सवार महिला है। हमने उसे पत्र देने के लिए कहा। उसने यह कहना शुरू कर दिया कि मेरे पास कोई पत्र नहीं है। हमने कहा कि पत्र निकालना होगा वरना हम तेरे कपड़े उतार देंगे और तलाशी लेगें। इस पर उसने पत्र अपने जूड़े से निकाला, और हमने पत्र को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास ले आए। देखा तो इस में लिखा था कि हातिब बिन अबी बल्ता की तरफ से मक्का के मुश्रकों की तरफ वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के किसी इरादे की उन को सूचना दे रहे थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हातिब बिन अबी बल्त: को बुलाया। और पूछा हातिब यह क्या है? उस ने कहा है अल्लाह के रसूल मेरे बारे में जल्दी न करें। मैं एक इस प्रकार का आदमी था जो कुरैश में आकर मिल गया था उन में से न था। और दूसरे मुहाजरीन जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम साथ थे उन की कुरैश में रिश्तेदारियां थीं जिन के माध्यम से वे अपने घर वालों तथा माल दैलत को बचाते रहे हैं। मैंने सोचा कि इन मक्का वालों पर कोई इहसान कर दूं क्योंकि इन के साथ मेरी कोई रिश्तेदारी तो न थी। शायद वह इस उपकार के कारण की मेरा ध्यान रखें। और मैंने किसी कुफ्र या इंकार के कारण से नहीं किया।(न मैंने इंकार किया है न मैं मुर्तद हुआ हूं न मैंने इस्लाम को छोड़ा है न मैं मुनाफिक हुआ हूं। मैंने यह काम इसलिए नहीं किया।) इस्लाम स्वीकार करने के बाद कुफ्र कभी पसन्द नहीं किया जा सकता।(मैं आप को विश्वास दिलाता हूं।) यह सुन कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया इस ने तुम से सच कहा है। हज़रत उमर वहां मौजूद थे उन्होंने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझे इजाज़त दें कि मैं इस मुनाफिक की गर्दन उड़ा दूं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया यह तो जंग बदर में मौजूद थे और तुम्हें क्या मालूम है कि अल्लाह ने बदर वालों को देखा और फरमाया जो चाहो करो मैंने तुम्हारे गुनाह क्षमा कर दिए।

(उद्धरित सही अल-बुख़ारी किताब जिहाद हदीस 3007 अनुवाद और व्याख्या हज़रत सैयद ज़ैनुल आबेदीन वलीउल्लाह शाह साहिब जिल्द 5 पृष्ठ 350 से 352

नजारत इशाअत रब्वा)

हज़रत वलीउल्लाह शाह साहिब बुखारी की एक हदीस की व्याख्या में लिखते हैं कि " एक और हदीस में इस महिला को मुशरकह कहा गया है और इस तलाश में जाने वाले हज़रत अली, हज़रत अबु मरतद ग़नवी और हज़रत ज़ुबैर थे। इसी तरह लिखा है कि वह महिला अपने ऊंट पर सवार जा रही थी। पत्र छिपाने के संबंधित दूसरी रिवायत में लिखा है कि जब उसने हमें गंभीर देखा तो वह अपनी कमर पर बंधी हुई चादर की तरफ झुकी और पत्र निकाल कर रख दिया। हम उस महिला को लेकर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए ।

हज़रत उमर रज़ि अल्लाह तआला ने कहा,उस ने अल्लाह और उसके रसूल आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और मोमिनों से धोखा किया है। हे अल्लाह के रसूल, मुझे आज्ञा दें कि उसकी गर्दन उड़ा दूं। आपने फ़रमाया क्या वह (अर्थात हातिब बिन अबी बलत:) जंगे बद्र में शरीक होने वालों में से नहीं था? आपने फरमाया, मुझे उम्मीद है कि अल्लाह तआला तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर के तुम्हें माफ फरमा देगा, और यह फरमाया कि जो तुम चाहो तुम्हारे लिए जन्नत हो चुकी। या फरमाया मैंने तुम्हारे गुनाहों को छुपा कर तुम्हें माफ फरमा दिया। यह सुन कर हज़रत उमर का आंखूं से आँसू जारी हो गए और फरमाया अल्लाह और उसका रसूल बेहतर जानते हैं।"

(सही अल-बुखारी किताबुल मगाज़ी हदीस 3983 अनुवाद और व्याख्या हज़रत सैयद ज़ैनुल आबेदीन वलीउल्लाह शाह साहिब जिल्द 8 पृष्ठ 53 से 55 नज़ारत प्रकाशन रबवा)

हज़रत अबूबकर ने भी हज़रत हातिब को मकोकस के पास मिस्र भेजा था और एक समझौता स्थापित किया गया था, जो हज़रत उमर बिन आस के मिस्र पर हमले तक दोनों के बीच जारी रहा। एक शांति सौदा था।

(अल्इस्तेयाब जिल्द 1 पृष्ठ 376 हातिब बिन अबी बलत: मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 2002 ई)

हज़रत हातिब के बारे में आता है कि हज़रत हातिब सुंदर शरीर के मालिक थे। हल्की दाढ़ी थी। गर्दन झुकी हुई थी। छोटे कद की तरफ झुकाव था और मोटी उंगलियों वाले थे

याकूब बिन उत्बा से रिवायत है कि हज़रत हातिब बिन अबी बल्ता ने अपनी वफात के दिन चार हज़ार दिरहम और दीनार छोड़ा। आप अनाज के व्यापारी थे और आपने न अपना विरसा मदीना में छोड़ा।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 61 मुद्रित दारुल अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई)

हज़रत जाबिर से रवायत है कि एक बार हज़रत हातिब का ग़ुलाम रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास अपने मालिक हज़रत हातिब की शिकायत लेकर आया। ग़ुलाम ने कहा, हे अल्लाह के रसूल हातिब ज़रूर जहन्नम में प्रवेश करेगा। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वस्ल्लम ने फरमाया, तुम ने झूठ बोला है। वह इसमें कभी प्रवेश नहीं होगा क्योंकि वह जंग बद्र और सुलह हुदैबिया में शामिल हुआ था।

(सुनन अत्तिरमज़ी हदीस 3864)

जैसा कि बताया गया कि हज़रत हातिब व्यापारी भी थे। बाजार में माल बेचने और सामान बेचने और कीमतों को निर्धारित करने के लिए इस्लामी शिक्षा क्या थी? इसका वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला अन्हो फरमाते हैं कि "आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने से मदीना में कीमतों पर इस्लामी सरकार नियन्त्रण रखती थी। (अर्थात बाज़ार की जो कीमतें होती थीं वे इस्लामी सरकार कीमतें तय करती थी।) इसलिए हदीसों में आता है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहो अन्हो एक बार मदीना के बाजार में फिर रहे थे कि आप ने देखा कि एक व्यक्ति हातिब बिन अबी बलत: अलमसली नामक बाज़ार में दो बोरे सूखे अंगूर के धरे बैठे थे। (सूखे अंगूर कह लें या कुछ जगह किशमिश लिखा है) उमर ने उन से भाव पूछा,तो उन्होंने एक दिरहम के दो मुद बताया जो बाज़ार के सामान्य मूल्य से कम था इस पर हज़रत उमर ने उन को आदेश दिया के अपने घर जाकर बेचें। क्योंकि यह बहुत सस्ता है बाज़ार में इतने कम दाम में बेचने नहीं देंगे। क्योंकि इस से बाज़ार का भाव ख़राब होता है। और लोगों को बाज़ार वालों पर कुधारणा पैदा होती है।" बाज़ार की जो अधिक कीमत है इस पर लोग कहेंगे कि वह हमारे से अवैध कीमत ले रहे हैं। हज़रत मुस्लेह मौऊद लिखते हैं कि फ़ुक्हा ने इस पर बहुत बहसें की हैं। कुछ ने इस तरह की रिवायतें भी वर्णन की हैं कि बाद में हज़रत उमर ने अपने विचार को छोड़ दिया था। लेकिन बहरहाल यह बात है कि आम तौर पर फ़ुक़्हा ने उमर की राय को एक व्यावहारिक मूल के रूप में स्वीकार किया है और उन्होंने लिखा है कि इस्लामी सरकार का यह कर्तव्य है कि वह रेट (rate) निर्धारित करे। (बाज़ार की कीमतें स्थापित करें।) अन्यथा देश की नैतिकता और अमानत में अन्तर होगा। लेकिन यह याद रखना चाहिए कि इस जगह में उन वस्तुओं का उल्लेख है जो मण्डियों में लाई जाती हैं (लाकर खुली मार्किट में बेची जाती हैं।) जो वस्तुएं मण्डियों में नहीं लाई जातीं और व्यक्तिगत स्थिति रखती हैं, उन का यहां उल्लेख नहीं है। अत: जो चीजें बाजार में लाई जाती हैं और बेची जाती हैं। उनसे संबंधित इस्लाम का यह स्पष्ट आदेश है कि एक दर तय होना चाहिए (मूल्य निर्धारित होनी चाहिए) ताकि कोई दुकानदार कीमत में अस्थिरता न कर सके। इसलिए, कुछ आसार और हदीसें फक्हा ने लिखी हैं जिनमें इस का समर्थन है।"

(ख़ुत्बाते महमूद जिल्द 19 पृष्ठ 307-308 ख़ुत्बा जुम्अ: 10 जून 1938 ई)

सरकार की प्रणाली के अधीन चरागाह और वहाँ पानी के लिए कुएं खुदवाने का काम भी इस्लामी सरकार का काम है। यह काम भी एक बार आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत हातिब से करवाया था। इस बारे में रिवायत में आता है कि जंग बनू मुस्तलक से वापसी पर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नकीए के स्थान से गुज़रे तो वहाँ व्यापक क्षेत्र और घास देखी। वहां एक बड़ा क्षेत्र था और हर जगह एक बड़ा हरा क्षेत्र था और वहां कई कुएं थे। भूजल भी अच्छा था। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन कूओं के पानी के बारे में पूछा। तो कहा गया कि हे अल्लाह के रसूल! पानी तो बहुत अच्छा है। लेकिन जब हम इन कुओं की सराहना करते हैं, तो उनका पानी कम हो जाता है और कुएं बैठ जाते हैं । उस पर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत हातिब बिन अबी बलत: को आदेश दिया कि वह एक कुआं खोदें और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नकीई को चारागाह बनाने का आदेश दिया। अर्थात यही वह आधिकारिक चारागाह है जो सरकार के प्रशासन में होगी। हज़रत बिलाल बिन हरिस मुज़नी को इस पर निगरान के रूप में नियुक्त किया। हज़रत बिलाल ने कहा, हे अल्लाह के रसूल में इस भूमि के कितने हिस्सों को चारागाह बनान चाहिए? यह एक बड़ा क्षेत्र है। सरकार की चारागाह का वह हिस्सा कितना है? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब सुबह हो तो एक ज़ोर से पुकारने वाले व्यक्ति को खड़ा करो (रात के अंधेरे में तो ध्वनि बहुत दूर तक जाती है नां) सुबह हो तो ज़ोर से बोलने वाले व्यक्ति को खड़ा करो। फिर उसे मुकम्मल नामक वहां एक पहाड़ था, यह छोटा सा था, उस पर खड़ा कर दे। फिर जहां तक उस व्यक्ति की आवाज़ जाए उतने हिस्से को मुसलमान मुजाहिदीन के घोड़ों और ऊंटों की चारागाह बना दो। (यह भी उन का एक प्रबन्ध था। फुटों और मीलों की बात नहीं हो रही। उसके अंत में विभिन्न कोनों में लोगों को खड़ा करो और जहां तक आवाज़ जाती है, जहां तक आवाज़ आ रही है वह इस चरागाह की सीमा होगी। और वह मुसलमान मुजाहिदीन के घोड़ों के लिए और ऊंटों के लिए चरागाह होगी जिसके माध्यम से वह जिहाद कर सकें। यह बैयतुल माल और सरकारी चरागाह है और युद्ध में जाने वाले जो मुजाहिदीन हैं

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

उनके घोड़े और ऊंट वहाँ चरेंगे।) हज़रत बिलाल ने उस पर निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल! मुसलमानों के आम चरने वाले जानवरों के बारे में क्या राय है। (बहुत सारे आम मुसलमानों के जानवर भी बाहर खुले मैदानों में, चारागाह में चरते हैं उनके बारे में क्या राय है? आप का क्या इरशाद है?) आपने फ़रमाया वह इस मैं प्रवेश नहीं करेंगे यह सिर्फ उन लोगों के लिए है जो जिहाद के लिए अपने ऊंट और घोड़ों की तैयारी कर रहे हैं। हज़रत बिलाल ने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल इस कमज़ोर पुरुष या कमज़ोर महिला के बारे में आपका क्या विचार है जिसके पास कम संख्या में भेड़-बकरियां हूँ और वह उन्हें स्थानांतरित करने पर शक्ति न रखते हों। (बहुत थोड़ी संख्या में ग़रीब लोग हैं कुछ बकरियां या भेड़ें रखी हुई हैं दूर तक ले जाना उनके लिए बहुत कठिन है या कहीं और भी जा नहीं सकते। कमज़ोर है बूढ़े हैं महिलाएं हैं) तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया उन्हें छोड़ दो और उन्हें चरने दो।"

(उद्धरित सबीलुल्हुदा वर्रिशाद जिल्द 4 पृष्ठ 352-353 जंग बनी मुस्तलक मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1996 ई)

उन्हें अनुमति है। ग़रीब, ज़रूरतमंदों को, कमज़ोरों को आज्ञा है कि वे सरकाती चारागाह से चर सकते हैं। तो राष्ट्रीय संपत्ति का उपयोग केवल राष्ट्रीय उद्देश्यों के लिए किया जाना चाहिए। हां, अगर ग़रीबों की व्यक्तिगत ज़रूरत है तो वे इसमें भाग ले सकते हैं।

हज़रत हातिब इब्न अबी ब्लता के आचरण का वर्णन करते हुए कि उन के आचरण कैसे थे। सैरुस्सहाबा के लेखक लिखते हैं: वाफादारी, बल्कि बहुत वफादारी थी। उपकार करना और सच बोलना उन के विशेष गुण थे। मित्रों और रिश्तेदारों का बेहद ख्याल रखते थे और फतेह मक्का के अवसर पर उन्होंने मुशरिकीन को जो पत्र लिखा था (जो उस स्त्री के हाथ भेजा जिसका ज़िक्र हो चुका है) वह वास्तव में रिश्तेदारों के विचार के कारण इन्हीं भावनाओं पर आधारित था इसलिए आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी इस नेक इरादे और सच्चाई को ध्यान में रखकर उनसे क्षमा का व्यवहार किया था।

(सैरुस्सहाबा जिल्द 2 पृष्ठ 411-412 मुद्रित इस्लामी पुस्तकालय)

उन्हें माफ कहा था।

अल्लाह तआला उन सहाबा के उच्च गुणों को हमें भी धारण करने की तौफीक़ प्रदान फरमाए।

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**

Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186

Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab

For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

पृष्ठ 1 का शेष

उनकी सेवा के प्रतिफल स्वरूप नहीं अपितु स्वयं कृपा-दृष्टि से प्रदान करे। अर्रहमान के शब्द से इसी विशेषता को प्रमाणित किया गया है। तीसरी विशेषता राजा में यह होनी चाहिए कि जिन कार्यों को प्रजा अपने प्रयासों से पूर्ण करने की सामर्थ्य न रखे उनको पूर्ण करने हेतु उचित सहायता प्रदान करे। अर्रहीम के शब्द से इसी विशेषता को सिद्ध किया गया है। चौथी विशेषता राजा में यह होनी चाहिए कि प्रतिफल और दण्ड विधान पर पूर्ण शक्ति और अधिकार रखता हो ताकि समाजिक नीतियों और उनसे संबंधित कार्यों में विध्न न पड़े। मालिकेयौमिद्दीन के शब्द से इसी विशेषता को प्रदर्शित किया गया है। निष्कर्ष यह कि उल्लिखित सूरह फ़ातिह: ने समस्त आवश्यक बातें जिनका किसी भी राजा में होना अनिवार्य है प्रस्तुत की हैं, जिससे सिद्ध होता है कि धरती पर ख़ुदा का राज्य और उसके कार्य-कलाप विद्यमान हैं । उसका पोषण करने का नियम भी विद्यमान, बिना मांगे कृपादृष्टि से प्रदान करने का नियम भी विद्यमान, कर्मों का प्रतिफल देने का नियम भी विद्यमान, सहायता करने का नियम भी जारी और दण्ड विधान भी विद्यमान। अत: जो कुछ किसी राज्य के लिए आवश्यक होता है धरती पर सब कुछ ख़ुदा का विद्यमान है और एक कण भी उसके अधिकार से बाहर नहीं। प्रत्येक फल और दण्ड का अधिकार उसके हाथ में है, प्रत्येक दया उसके हाथ में है। परन्तु इन्जील यह प्रार्थना सिखलाती है कि अभी ख़ुदा का राज्य तुम में नहीं आया। उसके आने के लिए ख़ुदा से प्रार्थना किया करो ताकि वह आ जाए अर्थात अभी तक उनका ख़ुदा धरती का राजा और मालिक नहीं। इसलिए ऐसे ख़ुदा से क्या आशा रखी जा सकती है। सुनो और समझो कि परम ज्ञान यही है कि धरती का कण-कण भी ऐसा ही ख़ुदा के आधिपत्य में है जैसा कि आकाश के कण-कण पर उसका राज्य है, और जिस प्रकार आकाश पर उसकी गौरवशाली आभा है धरती पर भी एक गौरवशाली आभा है, बल्कि आकाशीय आभा तो एक आस्था संबंधी मामला है। सामान्य लोग न तो आकाश पर गए न उसको देखा परन्तु ख़ुदा के राज्य की जो अद्भुत प्रकाशमय झलक धरती पर है वह तो स्पष्टत: हर मनुष्य को आंखों से दिखाई दे रही है ।

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 34 से 37)

☆ ☆ ☆

अख़बार बदर के पर्चों की सुरक्षा करें

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के ज़माना की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई से निरन्तर कादियान से प्रकाशित हो रहा है। और जमाअत के लोगों की धार्मिक ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में कुरआन मजीद की आयतें, आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसें और हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के मलफूज़ात तथा लेखनी सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहलि अज़ीज के ख़ुत्बा जुम्अ:, ख़िताब, ईमान वर्धक पैग़ाम, हुज़ूर अनवर के ईमान वर्धक दौरे और रिपोर्टें प्रकाशित होती हैं। इन का अध्ययन करना इन को दूसरों तक पहुंचाना और अपने बच्चों की तालीम तथा तरबियत करना हम सब का फर्ज़ है इन सब उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए अख़बार बदर के पर्चों की सुरक्षा करना हम सब की प्रमुख ज़िम्मेदारी है।

धार्मिक शिक्षा पर आधारित यह अख़बार चाहता है कि इस का सम्मान किया जाए। अत: इस को रद्दी में बेचना इस के सम्मान को नष्ट करने के समान है। अगर इस को संभलाना संभव न हो तो इस को ध्यान पूर्वक नष्ठ कर दें। ताकि इन पवित्र बातों का अपमान न हो। आशा है कि जमाअत के लोग इस और विशेष ध्यान देंगे और इस से लाभांवित होने की कोशिश करेंगे। और इन बातों को ध्यान में रखेंगे।

(सम्पादक)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

कि मुझे ज्ञान नहीं है। हुज़ूर अनवर ने फरमाया: आप एक अच्छे परीक्षक हैं कि आप को पता ही नहीं पैसा कहां से आया है।

नेशनल सैक्रेटरी, अमुरे ख़ारिजा से हुज़ूर अनवर ने फरमाया: क्या आपने लोगों से संपर्क किया है और मीडिया से संपर्क किया है? अपने संपर्कों को बढ़ाएं। अपने सार्वजनिक संबंधों को बढ़ाएं और अपने संपर्कों को हर स्तर पर रखें। यहां, पाकिस्तान के शरीफ भी होंगे उन से संपर्क बढ़ाएं। आज एक पत्रकार ने पूछा था कि कल के कार्यक्रम में कोई पाकिस्तान का मेहमान नहीं था। आपके संपर्क और संबंध होने चाहिए।

अमीन ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की और कहा कि मैं खर्चों का नियमित हिसाब रखता हूं।

अपनी रिपोर्ट पेश करते समय, राष्ट्रीय सैक्रेटरी, वसाया ने कहा कि वसीयत करने वालों की संख्या 77 है। छह अतिरिक्त अनुरोध किए गए हैं। 77 में से दो वसीयतें कैंसिल भी हुई हैं इसलिए यह संख्या 75 है। उन में से 15 अंसार, 22 ख़ुद्दाम और 38 लज्ना हैं।

हुज़ूर अनवर ने आमला के सदस्यों की जांच की कि कितने मूसी हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : आमला के जो सदस्य मूसी नहीं हैं उनको भी वसीयत करने की तहरीक करें। वसीयत लाज़मी नहीं है। हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी ने लाज़मी रंग में तहरीक की थी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया :जर्मनी में जो लोग ऐसे स्थानों में काम करते थे, जहां शराब, सूअर का व्यवसाय हो रहा है, उन के बारे में हिदायत दी थी कि उन से चन्दा नहीं लेना। उन्हें वहां काम करने की मजबूरी है। जमाअत की कोई बाध्यता नहीं है कि उन से चन्दा लें आपातकालीन स्थिति उन काम करने वाले लोगों की होगी। जमाअत के लिए कोई मजबूरी नहीं कि उन से चन्दा ले। सैंकड़ों लोगों से चन्दा लेने से इन्कार कर दिया गया इस पर अमीर साहिब ने कहा कि हमारी आय कम होगी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : जो सिद्धांत है सिद्धांत है आप वसीयत पर ज़ोर देंगे तो आप की आय पूरी हो जाएगी। साल के अन्त में जो समीक्षा की गई तो बजाय इस के कि दो तीन लाख यूरो कम होते बल्कि दो लाख यूरो की अधिक आय हुई।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : आमला के मेम्बर सब कोशिश करें कि मूसी हो जाएं अगर वसीयत की शर्तों पर पूरा नहीं उतरते तो शर्तें पूरी करने की कोशिश करें।

अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए, राष्ट्रीय सैक्रेटरी तरबियत ने कहा कि अमीर साहिब कुरआन करीम की कक्षा लेते हैं। कुरआन का अनुवाद पढ़ाते हैं। कुरआन के सहीह उच्चारण के बारे में भी साथ में बताते हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि तरबियत विभाग का काम है कि लोगों को नमाज़ों के बारे में ध्यान दिलाए। कुरआन करीम में ईमान बिल्ग़ैब के बाद नमाज़ स्थापित करने का आदेश है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि इस मस्जिद के विभाग में कितने आदमी रहते हैं। इस पर सैक्रेटरी ने बताया कि पांच से आठ मील के मध्य के क्षेत्र में पचास से अधिक लोग रहते हैं। इस पर हुज़ूर ने फरमाया कि जर्मनी में तो चालीस सा पचास मील का सफर तय कर के लोग नमाज़ पढ़ने आते हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया मैंने अपने ख़ुत्बा में नमाज़ पढ़ने की तरफ ध्यान दिलाया है तो क्या अगले दिन मस्जिद में हाज़री बढ़ी थी या नहीं बढ़ी थी या कहा होगा कि यह उन लोगों के लिए है जो मस्जिद में बैठे हुए हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि कक्षा लगा कर कुरआन मजीद पढ़ा दी और अनुवाद सुना दिया। परन्तु सूरत बकर: की तीसरी आयत पर अनुकरण नहीं करते। अंसार नहीं कर रहे। आमला के मेंम्बर नहीं कर रहे तो क्या लाभ कुरआन मजीद पढ़ाने और अनुवाद सुनाने का।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि बुनियादी चीज़ों पर आप का ध्यान नहीं रहा तो बाकी क्या रह गया। जमाअत के साथ नमाज़ पर बार बार ध्यान दें। कुरआन करीम हदीस और खुत्बों के हवाले निकाल कर हर सप्ताह घरों में भेजा करें।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि जो मस्जिद से अधिक दूर है दो तीन घराने एक साथ होकर तो नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ सकते हैं आपस में मुहब्बत बढ़ेगी अगर पहले से मुहब्बत है तो और अधिक होगी।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि नमाज़ की आदत डालें तो फिर बच्चों को भी आदत पड़ेगी। औरतों को शिकायत है कि मर्द नमाज़ नहीं पढ़ते। हुज़ूर अनवर ने फरमाया की ज़ैली तंज़ीमें ख़ुद्दाम अंसार लज्ना जो अपने प्रोग्राम करती हैं वे सब मिल कर एक ही दिन अपने अपने अलग अलग प्रोग्राम बना लें। अत्फाल अलग प्रोग्राम बना सकते हैं। अब तो आप के पास काफी स्थान है। कई हाल हैं। लायब्रेरी है। आप सब एक दिन में अपने अपने प्रोग्राम बना सकते हैं। तो इस प्रकार सारी फैमली एक ही दिन में मस्जिद में आएगी तो फिर यह बहाना नहीं होगा कि कभी अंसार कभी लज्ना कभी खुद्दाम के प्रोग्राम के लिए बार बार आना पड़ता है। तो हमारा इतना खर्च होता है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया अपने सातों विभागों में सैक्रेटरी को सक्रिय करें। इस प्रकार का सैक्रेटरी तरबियत हो जो सब से प्यार से काम कर सके। इस से शिकायतें दूर हो जाऐंगी। तक्वा न होने के कारण शिकायतें पैदा होती हैं।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया:

तक्वा यही है यारो कि नख़वत को छोड़ दो
किबरो ग़रोर बुख़ल की आदत को छोड़ दो

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि जमाअत के जलसे हैं जलसा सीरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, जलसा यौमे मसीह मौऊद, जलसा मुस्लेह मौऊद जलसा ख़िलाफत ये तो सब एक साथ इकट्ठे होते हैं,सारी जमाअत इन जलसों में शामिल होती है। इन के अतिरिक्त ज़ैली तंज़ीमें अपना प्रोग्राम एक दिन बनाया करें।

हुज़ूर अनवर ने बताया कि आप ने यहां जलसों की जो हाज़री बताई है उस में लजना तथा नासरात की संख्या अधिक है। अंसार कम हैं। इस तरफ ध्यान देने की आवश्यकता है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि आप के इन सामूहिक प्रोग्रामों के कारण अगर सारे आ रहे होंगे। तो यह फैमलियों के सुधार का कारण बनेगा। यहां कि माहौल से निकालने के लिए इस प्रकार के प्रोग्रामों की आवश्यकता है।

यह रिपोर्ट पेश होने के बाद अमीर साहिब डेनमार्क घरों में नियमित विज़िट करते हैं। हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि अमीर साहिब नियमित घरों में जाते रहें। अगर किसी स्थान से न भी जाती रहे तो वापस आ जाऐं। आदेश भी यही है कि सलाम करें अगर जवाब नहीं मिलता तो वापस आ जाऐं। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक सहाबी केवल इस आदेश का अनुकरण करने के लिए घरों में जाते थे। कि अगर से कहीं से सलाम का जवाब नहीं मिलेगा या इंकार होगा तो वापस आ जाऊंगा इस तरह इस आदेश पर भी अनुकरण हो जाएगा।

नेशनल सैक्रेटरी अमूरे आम्मा ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए कहा कि इस समय कोई मामला मेरे पास नहीं है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि अमूरे आम्मा का काम केवल झगड़े निपटाना नहीं है। या केवल कज़ा के फैसलों को लागू करवाना नहीं है। यह तो एक गौण कार्य है।

अमूर आम्मा का काम है कि लोगों का मार्ग दर्शन करे कि लोगों को नौकरियां दिलवाए। नौकरियां दिलवाने में सहायता करे। जो फारिग़ हैं उन को काम का रास्ता बताए। उन का मार्ग दर्शन करे। आप नियम पढ़ें और उन पर अनुकरण करें।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि तरबियत का काम सक्रिय हो जाए तो अमूरे आम्मा और माल के काम में सुविधा हो जाती है। इस प्रकार तरबियत विभाग के सक्रिय हो जाने से उन के काम में सुविधा हो जाती है।

नेशनल सैक्रेटरी तालीम को हिदायत देते हुए हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि आप अपने सारे छात्रों का डाटा इकट्ठा करें। आप के पास रिकार्ड होना चाहिए। छात्रों की कौंसलिंग होनी चाहिए। उन का मार्गदर्शन हो ताकि वे यूनिवर्सिटी में उचित विषय को ले सकें। जो भविष्य में उन के काम आना है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि आप दूसरे माहिरों से भी उन को पैसे दे कर अपने छात्रों की कौसलिंग करवा सकते हैं।

नेशनल सेक्रेटरी सनअत तथा तिजारत को हुज़ूर अनवर ने हिदायत देते हुए फरमाया कि लोगों को काम की तरफ ध्यान दिलवाऐं। इस प्रकार के लोग जो सेहत मंद हैं कुछ न कुछ अपने हाथ से काम करें। काम करने की आदत डालने की कोशिश करनी चाहिए।

अपनी रिपोर्ट पेश करते समय, राष्ट्रीय सैक्रेटरी माल ने कहा कि हमारा बजट 2.1 मिलियन करोंज़ है। चन्दा देने वालों की संख्या 189 है। उनमें से 112 सामान्य हैं और 77 मूसी हैं। आम चन्दा का बजट 9 लाख करोंज़ है जब कि वसीयत करने वालों का बजट सात लाख करोंज़ है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया प्रति व्यक्ति आय के हिसाब से चन्दा आम तथा

चन्दा वसीयत के बारे में समीक्षा की। समीक्षा के बाद फरमाया कि यहां मूसी की आय कम है तथा चन्दा आम देने वालों की आय अधिक है। जब कि सारी दुनिया में वसीयत करने वालों की आय अधिक होती है और दूसरों की कम प्रकट होती है क्योंकि मूसी तक्वा धारण करते हुए अपनी आय के अनुसार चन्दा अदा करते हैं। आप अपने तक्वा के स्तर को बढ़ाएं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया वसीयत करने वालों को रसाला अल-वसीयत से उद्धरण निकाल कर दिया करें। बताएं कि या तो पूरी आय पर वसीयत करने वाले चन्दा अदा किया करें या फिर अपनी वसीयत कैंसिल करवा लें।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने फरमाया है कि मुझे इस बात की कोई चिन्ता नहीं है कि माल कहां से आएगा। ख़ुदा तआला देता है हां जो नहीं देता उस के लिए चिन्ता होनी चाहिए। कि माली कुरबानियों और चन्दों से वंचित हो कर ख़ुदा के फज़ल से महरूम हो जाते हैं। आप अपने व्यक्तिगत सम्पर्कों के साथ लोगों को ध्यान दिलाते रहें।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि अगर कोई चन्दा उपकार के रंग में दे रहा है तो न दे। ख़ुदा तआला तो यह फरमाता है कि अल्लाह तआला का तुम पर उपकार है तो तुम को ईमान लाने की तौफ़ीक़ प्रदान दी और ईमान यह है कि अल्लाह तआला की राह में खर्च करो अपने व्यक्तिगत सम्पर्कों को साथ अल्लाह तआला के मार्ग में खर्च करो।

एडिशनल सैक्रेटरी को हुज़ूर अनवर ने हिदायत देते हुए फरमाया कि लोगों के घरों में जाएं। और उन को ध्यान दिलाएं और उन को बताएं के मेरे ज़िम्मे यह काम लगाया गया है कि मैं चन्दों की तरफ और उस के स्तर के तरफ ध्यान दिलाऊं। आप आय के अनुसार चन्दा अदा नहीं कर रहे तो अपना चन्दा सहीह कर लें। मेरा काम चन्दा के स्तर बढ़ाने की तरफ ध्यान दिलाना है अत: धैर्य तथा सब्र के साथ ध्यान दिलाते रहें।

आमला के एक मेम्बर ने गुमनाम ख़तों के बारे में सवाल किया। इस सवाल के जवाब में हुजूर अनवर ने फरमाया कि गुमनाम ख़तों पर कार्य नहीं किया जाता मैं इस लिए वापस भिजवा देता हूं अमीर को या दूसरे उहदेदारों को ताकि उन को पता लग जाए की इस प्रकार की सोचें हैं। इस प्रकार अपने सुधार का अवसर मिलता है। माहौल में लोगों की बातों की पता चलता है फित्ना फैलाने वालों का पता चलता है।

सवाल करने वाले दोस्त ने कहा कि जब हम कोई शिकायत करते हैं या किसी आरोप का विवरण देते हैं और हुज़ूर को पत्र भिजवाते हैं तो हमें यह डर होता है कि यहां का प्रशासन हमें जमाअत से निकलवा देगा।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : ये आप की समय के ख़लीफा पर कुधारणा है जो लोग जमाअत से बाहर निकलते हैं वे एक चरम होते हैं। दूसरों के अधिकार छीनने वालों का दूसरों के अधिकार मारने वालों का जमाअत से निष्कासन होता है और इस से कम जो सज़ा होती है वह चंदा नहीं लिया जाता और पद नहीं दिया जाता या जमाअत के कार्यक्रमों में भाग लेने पर प्रतिबंध है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया आप को जमाअत की प्रणाली का पता ही नहीं, आप जन्मजात अहमदी हैं और 64 साल आयु है और जमाअत की प्रणाली से अनभिज्ञ हैं। आप को पता ही नहीं कि समय के ख़लीफा ने कैसे काम करना है अपने दिमाग से जाहलाना सोच निकाल दें।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: कभी-कभी अस्थायी सज़ा भी होती है। मैं अधिकारियों को ध्यान दिला चुका हूं कि मुझे सही रिपोर्ट भेजें और इसे पूरी तरह से अनुसंधान करें और जांच करें ताकि कोई भी ग़लत वाक्य न हो। अगर कभी इस प्रकार हो जाए कि किसी के ग़लत सज़ा मिल जाए तो बाद में आयोग द्वारा जांच कर के जो दोषी हैं। उस को सज़ा मिलती है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: हमेशा याद रखें कि ख़ुदा तआला से दया और रहम मांगना चाहिए, एक व्यक्ति को एक अपराध में पकड़ा गया। उसने जुर्म नहीं किया था। उसने ख़ुदा तआला से कहा, हे अल्लाह मुझे न्याय दे। अदालत में फैसला हो गया था और उसे सज़ा मिल गई। उस ने कहा कि मैंने न्याय मांगा था। ख़ुदा तआला ने उससे कहा, तुम को दया और फज़ल मांगना चाहिए। तुम ने न्याय मांगा था। वह तुम्हें मिल गया। तुम ने अमुक समय पर अमुक जानवर को मार दिया था यह उस की सज़ा है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया : आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कुछ सहाबा को बातचीत न करने की सज़ा थी ये सहाबा मस्जिद जाते थे। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने उन सहाबा पर नज़र डालते थे। एक सहाबी वर्णन करते हैं कि हमें यूं महसूस होता था कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझे देख रहे हैं। मैं अपना चेहरा उठाता तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपना चेहरा बदल देते थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ तआला ने फरमाया तो यह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निकट सुधार था। आप उन सहाबा को देखा करते थे और जब उन का सुधार हो गया तो आप ने उन को माफ कर दिया।

उसी सदस्य ने फिर से कहा कि मैंने अपने बेटे को रोक दिया है कि अब पत्र नहीं लिखना ऐसा न हो के सज़ा मिल जाए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जब बच्चों को इस प्रकार से रोकोंगे तो फिर बच्चों के दिमाग़ में कुधारणा पैदा हो जाएगी। दूरियां होंगी और निज़ाम से फासले बढ़ जाऐंगे। यह याद रखें के कोई फैसले किसी के कहने पर नहीं होते। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह फरमाया था कि अगर कोई ग़लत निर्णय करवा रहा होगा तो वह अपने पेट में आग भर रहा होगा। एक तरफ तो वह अपने पेट में आग भर रहा होगा और दूसरी तरफ अगर दूसरा पक्ष पीछे हट जाए तो यह गलत है तो यह दूसरा पक्ष भी अपना नुकसान कर रहा होगा।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: ऐसे निर्णय मनुष्यों के पापों को क्षमा करने का कारण बन जाते हैं।

नेशनल आमला जमाअत अहमदिया डेनमार्क की यह मुलाकात एक बज कर 50 मिनट पर समाप्त हुई। इस के बाद मजलिस आमला के सदस्यों ने हुज़ूर अनवर के साथ समूह में तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए आमला के सारे मेम्बरों से हाथ मिलाया।

इस के बाद दो बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ मस्जिद नुसरत जहां पधार कर नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों को अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए।

कूपन हेगन (डेनमार्क) से प्रस्थान और माल्मो (स्वीडन) में आगमन

आज कार्यक्रम के अनुसार डेनमार्क का दौरा पूरा हो रहा था और कूपन हेगन से माल्मो (Malmo) स्वीडन के लिए प्रस्थान था। आदरणीय मामूनुर्रशीद साहिब अमीर जमाअत स्वीडन, आदरणीय आग़ा यह्या ख़ान मुबल्लिग़ इन्चार्ज स्वीडन और आदरणीय मंसूर अहमद साहिब सदर ख़ुद्दामुल अहमदिया स्वीडन हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ का स्वागत करने के लिए माल्मो कूपन हेगन पहुंचे थे। स्वीडन यात्रा के लिए पहले से निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार, काफिला के लिए गाड़ियां स्वीडन से आई थीं।

डेनमार्क जमाअत के दोस्त दोपहर के बाद से ही अपने प्यारे आक़ा को अलविदा कहने के लिए मस्जिद नुसरत जहां में जमा होने शुरू हो गए थे। एक तरफ, महिलाएं और बच्चियां खड़ी थीं, दूसरी ओर पुरुष थे। बच्चियां ग्रुपस की शक्ल में अलविदाई नज़्में पढ़ रही थीं।

5 बज कर 5 मिन्ट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अपने निवास स्थान से पधारे और कुछ देर तक आशिकों के मध्य में रहे। इस दौरान एक तरफ से बच्चियां नज़्में पढ़ रही थीं। दूसरी तरफ औरतें दर्शन से लाभ पा रही थीं। और आदमी अपने हाथ ऊंचे कर के अलविदा कह रहे थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई। और काफिला माल्मो से स्वीडन के लिए रवाना हो गया। कोपनहेगन से माल्मो की दूरी 45 किलोमीटर है, कोपेनहेगन और माल्मो के बीच समुद्र है जिस पर 16 किलोमीटर लंबा पुल निर्माण करके इन दोनों शहरों को आपस में मिला दिया गया है। पुल पार करके जैसे ही हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ स्वीडन की सीमा में प्रवेश किया तो यहाँ स्वीडन पुलिस वाहन ने काफिले को Escort किया और माल्मो के जमाअत के केंद्र तक पहुँचने के सभी रास्ते पुलिस ने साथ साथ साफ किए।

हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ का स्वीडन का यह दूसरा दौरा है। इससे पहले, हुज़ूर अनवर 2005 ई में 11 सितंबर से 19 सितंबर तक स्वीडन का दौरा किया था।

आज का दिन जमाअत अहमदिया स्वीडन के लिए एक बहुत ही ख़ुशी का दिन था। हज़रत ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के मुबारक कदम दूसरी बार स्वीडन की धरती पर पड़े हैं। अल्लाह तआला

इस सआदत को स्वीडन की जमाअत के लिए हर लिहाज़ से स्वागत तथा बरकत का कारण बनाए और इस यात्रा से नए रास्ते खोलने वाला हो आमीन ।

11 मई 2016 ई (दिन बुधवार)

सुबह चार बज कर दस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्र-रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद महमूद में पधार कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ के अदा करने के बाद,हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर गए।

कार्यक्रम के अनुसार सुबह ग्यारह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने कार्यालय आए। स्वीडन टेलीविज़न के पत्रकार Helena Bohm Nilsson स्थानीय अखबार Skanska Dagbladat प्रतिनिधि साऊथ स्वीडन के सबसे बड़े अखबार Sydsvenskan के प्रतिनिधि जर्नलिस्ट Jens Mikkelsen और स्वीडिश राष्ट्रीय रेडियो के प्रतिनिधि Anna Bubehko हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का इनट्रवियू लेने के लिए आए थे। इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया के चार पत्रकारों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का इनट्रवियू किया।

स्वीडिश टेलीविजन का हुज़ूर अनवर से इनट्रवियू

सब से पहले स्वीडिश टेलीविजन पत्रकार ने हुज़ूर अनवर का इनट्रवियू लिया।

*** पत्रकार ने सवाल उठाया कि इस मस्जिद का जमाअत अहमिदया के लिए क्या महत्त्व है?**

इसके जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मस्जिद का उद्देश्य सभी मोमिनों को इबादत के लिए एक जगह जमा करना होता है। कुरआन करीम में आता है कि मनुष्य के जन्म का उद्देश्य अपने निर्माता के सामने झुकना है। अत: हमारा विश्वास है कि एक मुसलमान मोमिन के लिए आवश्यक है कि वह अल्लाह तआला के अधिकार अदा करे और इस मस्जिद के निर्माण का भी यही उद्देश्य है कि अहमदी मुसलमान इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार दिन में पांच बार यहां इकट्ठा होंगे और अपने निर्माता की इबादत करेंगे और जुम्अ: अदा करेंगे। इस के इलावा समुदाय के लाभ के लिए यहां जमा होंगे और कुछ समय वैसे ही एक स्थान पर जमा होने के लिए इकट्ठा होंगे। लड़के और लड़कियों यहाँ आएंगे और multi purpose हॉल में अपनी खेल आदि करेंगे या अन्य फंकशनज़ का आयोजन। परन्तु मुख्य उद्देश्य अपने निर्माता वास्तविक इबादत के लिए प्रस्तुत किया जाना है।

*** महोदया ने पूछा, आप क इस मस्जिद की इमारत के बारे में क्या विचार है?**

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : यह इमारत बहुत सुन्दर शैली में निर्माण की गई है। मुझे लगता है कि स्थानीय लोग भी इस इमारत को पसंद करेंगे क्योंकि इस मस्जिद का नक्शा एक बहुत ही सुन्दर शैली पर बनाया गया है।

***इस के बाद महोदय ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से पूछा कि आप का मिशन क्या है?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भविष्यवाणी फरमाई थी कि अंतिम समय में जब मुसलमान इस्लाम की मूल शिक्षाओं को भुला देंगे और सीधे रास्ते से भटक जाएंगे तब एक व्यक्ति प्रकट होगा जो अल्लाह तआला की तरफ से भेजा जाएगा और वह इस्लाम के पैगम्बर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मानने वाला होगा और वह मसीह होगा और महदी कहलाएगा। वह मुसलमानों और अन्य धर्मों के मार्गदर्शन करेगा कि मूल इस्लाम क्या है और मानव जाति को एक झंडे तले इकट्ठा करेगा ताकि वह अपने निर्माता के अधिकार अदा कर सकें और एक दूसरे के बीच और समाज में प्यार मुहब्बत और सद्भाव को पैदा कर सकें।

*** महोदया ने पूछा कि यहां मैंने एक नारा सुना है। क्या आप इसके बारे में कुछ बताएंगे?**

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : यदि नारे से आप की मुराद "मुहब्बत सब के लिए नफरत किसी से नहीं " है तो यह कुरआन की शिक्षाओं और इस्लाम का सार है। इस्लाम शांति और सुरक्षा है। हमें एक दूसरे से प्यार करना चाहिए, प्यार मुहब्बत फैलाना चाहिए। कुरआन करीम कहता है कि अपने दुश्मन से भी न्याय का व्यवहार करो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : प्यार क्या है? प्यार सहानुभूति का नाम है यह प्यार ही है कि हम नहीं चाहते कि कोई भी व्यक्ति ऐसा कार्य करे जिन से वह अल्लाह तआला के अज़ाब को पाने वाला बन जाए। ये प्यार की भावनाएं उस के लिए भी हैं जो स्पष्ट रूप से हमारा दुश्मन है। और हम किसी को भी हमारे दुश्मन के रूप में नहीं मानते हैं। प्यार के भी कई स्तर होता हैं। बहनों भाइयों के लिए कुछ अन्य, दोस्तों के लिए अन्य प्यार होता है और माता पिता के लिए एक अलग प्यार होता है इन्हीं प्यार के विभिन्न स्तर को सामने रखते हुए हम दुनिया के सभी आदमियों से प्यार करते हैं और किसी को नुकसान नहीं पंहुचाना चाहते। प्रत्येक के लिए सहानुभूति रखते हैं।

इस के बाद, महोदया ने पूछा कि आप उन युवाओं के बारे में क्या सोचते हैं जो यहां माल्मो और स्वीडन में आई.एस.आई.एस में शामिल हो रहे हैं?

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: ISIS क्या चीज़ है? यह एक संगठन है जो तथाकथित नेताओं ने अपने निजी हितों के लिए बनाई हुई है और यह लोग युवा पीढ़ी को अपने साथ जोड़ने के लिए विभिन्न प्रकार के लालच देते वहाँ हैं उदाहरण के लिए, जब वे मर जाएंगे तो वे जन्नत में जाएंगे और यदि वे जीवित रहते हैं तो वे इस्लाम की सेवा कर रहे हैं। लेकिन यह सच नहीं है। जैसा कि मैंने पहले कहा कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भविष्यवाणी फरमाई थी कि अंतिम समय में लोग इस्लामी शिक्षाओं को भुला देंगे और उनकी हिदायत के लिए एक व्यक्ति आएगा और हमारा विश्वास है वह व्यक्ति मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादियानी संस्थापक जमाअत अहमदिया के रूप में प्रकट हो चुका है ऐसा कोई भी संगठन या कोई भी युवा संगठनों में शामिल कोई भी व्यक्ति जो उग्रवाद की शिक्षा देता है तो यह कर्म सरासर इस्लामी शिक्षाओं के ख़िलाफ है। जो लोग कुछ कर रहे हैं वह ठीक नहीं है।

*** महोदया पत्रकार ने पूछा कि आपकी जमाअत युवा पीढ़ी को आई.एस. आई.एस में शामिल होने से रोकने के लिए किया उपाय करती है?**

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जमाअत अहमदिया के अलावा दूसरे युवाओं पर तो हम कोई प्रभाव नहीं रखते और हमारी जमाअत से कोई भी ऐसा नहीं है जिसने ISIS में शामिल होने की इच्छा की हो। हम शांतिप्रिय लोग हैं, और हम बचपन से ही सिखाते हैं कि वे शांतिपूर्ण बनें और उनके सामने इस्लाम की वास्तविक तस्वीर रखते हैं। तो आपको अहमदियों में से ऐसा कोई व्यक्ति नहीं मिलेगा। जहां तक अन्य मुस्लिमों का सम्बन्ध है तो हम उन्हें ज़रूर बताते हैं कि यह इस्लामी शिक्षाओं के ख़िलाफ है। लेकिन उन पर हमारा कोई असर नहीं पड़ता है। यही कारण है कि हम सरकारों से कहते हैं कि ये लोग आप की प्रजा हैं इसलिए आपको इस तरह के कानून बनाने चाहिए जिन से यह नौजवान चरमपंथी संगठनों में शामिल होने से रोक जाएं।

*** महोदया पत्रकार ने कहा कि आपने उस बहस के बारे में तो सुना होता जिसमें मुस्लिम नेताओं ने महिला के साथ हाथ मिलाने से इनकार कर दिया था?**

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "यह कोई बड़ी समस्या नहीं है। मैं ख़ुद भी महिलाओं के साथ हाथ नहीं मिला। प्रत्येक जनजाति और क़ौम के अपने रस्म तथा रिवाज होते हैं। हम महिला के सम्मान के लिए उसे नहीं छूते हैं। मैं कई बार झुक जाता हूं जो हाथ मिलाने से अधिक सम्मान जनक है। हिंदू हाथ जोड़ कर नमस्ते कहते हैं। जापानी झुकते हैं इसी प्रकार, दुनिया के विभिन्न राष्ट्रों के विभिन्न लोग हैं। नाइजीरिया में कुछ जनजातियां हैं जिनके प्रमुख दूसरे लोगों के सामने भोजन नहीं खाते हैं, भले ही किसी देश का कोई प्रमुख क्यों न हो। कुछ अफ्रीकी जनजाति के चीफ जलसा सालाना में जब हमसे मिलने आते हैं तो वे कहते हैं कि हमारे अपने रस्म तथा रिवाज हैं। हम ऐसा नहीं करेंगे, हम इस तरह बैठेंगे, हम आपके साथ खाना नहीं खाएंगे, और हम उन लोगों का सम्मान करते हैं क्योंकि वे हमारे देश में हमारे देश में हमारे मेहमान बन कर आते हैं। अगर आप यह कहें कि बेशक आप मुसलमान हैं लेकिन चूंकि आप यूरोप में रह रहे हैं और यूरोप के यही रस्म तथा रिवाज हैं कि महिला के साथ हाथ मिलाया जाए तो ठीक है हम महिला का सम्मान करते हैं उसका सम्मान करते हैं लेकिन यह जरूरी नहीं कि हाथ मिलाना ही उनके सम्मान का माध्यम है। मैं कहता हूं कि मेरे दिल में महिला का अधिक सम्मान है उस व्यक्ति कि तुलना में जो औरत को साथ हाथ मिलाता है ज़ाहिर में उस के सामने बहुत अच्छा दिखता है।

*** महोदया पत्रकार ने कहा कि इस का अर्थ यह है कि आप औरत के साथ हाथ नहीं मिलाते तो आप पूर्ण रूप से समाज में एकीकृत नहीं हैं।**

इसके जवाब में, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया: आप एकी-करण के क्या अर्थ करते हैं? मैंने कई राजनेताओं से पूछा है लेकिन वे एकीकरण

की सटीक परिभाषा नहीं बता सकते हैं। मेरे निकट इस एकीकरण का मतलब है कि आप अपने देश से प्यार करें और हमारे विश्वास के अनुसार देश से प्यार करना आपके ईमान का एक हिस्सा है। यदि एक पाकिस्तानी या अफ्रीकी जो स्वीडन में स्थानांतरित हो गया है और यहां आया है और स्वीडिश नागरिकता प्राप्त कर ली है, तो फिर उसे स्वीडन से प्यार करना होगा। उसे देश के प्रति वफादार होना चाहिए। यदि इस देश पर दुश्मन की तरफ से हमला किया जाता है, तो इसे देश की फौज में शामिल हो कर मुकाबला करना होगा। उसे देश के विकास के लिए भूमिका निभानी होगी। उसे उस देश के लिए शोध करनी होगी। उसे इस देश के लोगों से प्यार करना होगा। उसे कानूनों का पालन करना होगा और उन सभी कानूनों का पालन करना होगा जो संसद द्वारा लागू किए गए हैं अत: यह एकीकरण है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : अब दुनिया सिमट चुकी है। आने जाने में आज़ादी है। इस देश में या अन्य देशों में केवल ईसाई या यहूदी नहीं रह रहे बल्कि मुसलमान, हिंदु, बौद्ध और अन्य धर्मों के लोग भी रहते हैं। और उनके पास अपनी ख़ुद के रीति-रिवाज हैं। अगर आप यह कहें कि उन्हें अपने वह रीति-रिवाजों भी छोड़ने होंगे जिनसे घरेलू कानून को कोई ठेस नहीं पहुँच रही या जिनसे देश के लोगों को कोई नुकसान नहीं पहुंच रहा तो ठीक नहीं होगा। आपको उन के व्यक्तिगत मामलों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। यद्यपि ये मामले उनके धर्म या उनके स्वयं के रीति-रिवाजों से संबंधित हैं, क्योंकि वे देश के प्रति वफादार हैं और यह एकीकरण है।

* उसके बाद महोदया ने पूछा कि यूरोपीय संगीत कॉम्पीटीशन कौन जीतेगा? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : मैं इस प्रकार की चीज़ों में कोई दिलचस्पी नहीं रखता।

*** महोदया ने अगला सवाल किया कि जब हम आपका इनट्रवियू लेने के लिए यहां आए थे, तो हमें सुरक्षा जांच के माध्यम से जाना पड़ा था। मुझे पता चला है कि पाकिस्तान में आप की जमाअत पर बहुत अत्याचार होते हैं आप इस को किस प्रकार लेते हैं?**

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ फरमाया: यद्यपि हम पर पाकिस्तान में अत्याचार किए जा रहे हैं लेकिन इसके बावजूद अहमदियों की एक बड़ी संख्या जो कि लाखों में है पाकिस्तान में स्थित है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : पाकिस्तान में मैंने भी आधारहीन आरोपों के कारण कुछ दिन कारावास काटा है। लेकिन मैंने ख़लीफा चुने जाने तक वह देश नहीं छोड़ा। हमें उन अत्याचारों को सामना करना पड़ रहा है क्योंकि उन के पीछे हुकूमत है। वहां अहमदियों के विरुद्ध कानून लागू किए गए हैं। हम अपनी मान्यताओं को न तो व्यक्त कर सकते हैं न तब्लीग़ कर सकते हैं। हम अपनी इबादत के स्थानों को मस्जिद नहीं कह सकते। हम ख़ुद को मुसलमान मानते हैं, लेकिन वहां हम अपने आप को मुसलमान नहीं कह सकते हैं, यहां तक कि कानून की दृष्टि से हम अपने बच्चों के मुसलमानों की तरह नाम भी नहीं रख सकते। अत: इस प्रकार के अत्याचार का वहां हमें सामना है।

इस पर पत्रकार महिला ने पूछा कि क्या आप को यूरोप में भी खतरा हैं?

इस अवसर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यूरोप में तो Radicalised युवा पीढ़ी से प्रत्येक को खतरा है जैसा कि आपने पहले कहा था। लेकिन चूंकि मुस्लमानों की बड़ी संख्या या कई संप्रदाय और समूह अहमदियों के ख़िलाफ हैं,

इसलिए वे अहमदियों को नुकसान पहुंचा सकते हैं और वे जमाअत के प्रमुख को भी अपना निशाना बनाऐंगे। यही कारण है कि जब मैं यहाँ होता तो आम दिनों से भी बढ़कर जाँच और सुरक्षा का ध्यान रखा जाता है और जब मैं यहाँ नहीं भी होता तो तब भी सुरक्षा जाँच का प्रबंधन होता है अहमदियों में से प्रत्येक के पास अपना identity card होता है जिसे स्कैन किए जाने के बाद, वह मस्जिद में प्रवेश करता है। यह सिर्फ एक सुरक्षा कदम के लिए किया जाता है। हमें कुछ यूरोपीय देशों के अधिकारियों ने भी बताया है कि हमें सुरक्षा उपायों को धारण करना चाहिए।

*इन्ट्रवियू के अंत में महिला पत्रकार ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ का आभार व्यक्त किया और कहा कि शुक्रवार और शनिवार को आप की मस्जिद के आयोजन हो रहे हैं इस हवाले से मस्जिद के बारे में आप कुछ कहना चाहेंगे?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : शुक्रवार के दिन हमारा साप्ताहिक धार्मिक आयोजन होता है जो यहां शुक्रवार को दोपहर के समय आयोजित किया जाएगा। शनिवार को मेहमानों के लिए नियमित आधार पर एक समारोह आयोजित किया गया है। मुझे उम्मीद है कि आप को भी इस कार्यक्रम में भी आमंत्रित किया है। यदि नहीं, तो मैं आपको शनिवार को आने और इस कार्यक्रम में शामिल होने के लिए आमंत्रित करता हूं। वहां मैं इस्लामिक शिक्षाओं के बारे में बताऊंगा कि मुसलमानों को क्या करना चाहिए और अहमदियत क्या है और हमारी जमाअत का उद्देश्य क्या है। इसके बाद, महोदया ने एक बार फिर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ का शुक्रिया अदा किया।

हुज़ूर अनवर से एक अख़बार का इनट्रवियू

उसके बाद स्थानीय अखबार Skanska Dagbladat के पत्रकार ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ का इन्ट्रवियू किया। इन्ट्रवियू शुरू करने से पहले, पत्रकार ने कहा कि वह पहले इस मस्जिद का ज़िक्र करते हुए समाचार पत्र में लिख चुका है।

*** इस के बाद पत्रकार ने पूछा कि माल्मो से जुड़ा एक नौजवान को ब्रसेल्स में आतंकवाद के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया है। आई एस आई जिस प्रकार लोगों को भर्ती कर रहा है वह सबसे बड़ी समस्या है, आप इस संदर्भ में क्या कहेंगे?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया , मैं इस बारे में दीर्घ समय सूचित कर रहा हूं कि सरकारों को इस बारे में कदम उठाने चाहिए। यदि आपको किसी मस्जिद या मदरसा पर संदेह है, तो उन्हें नियमित रूप से उनकी निगरानी करनी चाहिए। अगर पूर्ण देखभाल की जाती है, तो मेरा विचार नहीं है कि कोई भी इस देश को छोड़ कर आई एस आई में शामिल हो सकता है। यदि इन लोगों को कट्टरपंथी किया जा रहा है तो इस देश के अन्दर ही किया जा रहा है। और यह सरकार का काम है कि वह देखे कि इन लोगों को कैसे चरमपंथ की शिक्षा दी जा रही है? जहां तक अहमदी मुसलमानों का संबंध है तो हमारा विश्वास है कि इस्लामी शिक्षाएं बड़ी स्पष्टता के साथ उग्रवाद और उत्पीड़न की निंदा करती हैं और जहां तक अहमदी युवा या किसी अन्य अहमदी का संबंध है, आप कभी भी अहमदी को नहीं देखेंगे कि उन्होंने देश छोड़ दिया है और आई एस आई या अन्य चरमपंथी समूहों में है। क्योंकि हमारी शिक्षाओं में प्यार, प्रेम और सद्भाव शामिल है। इन इस्लामी शिक्षाओं का उग्रवाद से दूर दूर तक से कुछ लेना देना नहीं है। और मेरा मानना है कि हर धर्म की मूल शिक्षा यही प्यार, प्रेम और सद्भाव है।

उसके बाद, पत्रकार ने कहा कि जो लोग युवा आई एस आई छोड़ कर ब्रिटेन या स्वीडन वापस आते हैं उन के बारे में आप क्या कहते हैं कि क्या उन्हें एक और मौका मिलना चाहिए?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : देखें जब आपने उन्हें हर जगह जाने की पूर्ण स्वतंत्रता दी है, तो आप उन्हें जांच नहीं सकते। सो उन लोगों को जेलों में नहीं, होस्टल्स में रखना चाहिए ताकि आप उन पर नज़र रखें और उन्हें बताएं कि देश के साथ वफादारी क्या चीज़ है? और इस का आप की आस्था में क्या स्थान है? क्योंकि हमारे विश्वास के अनुसार देश प्रेम ईमान का अंग है जो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का कथन है इसलिए यदि आप एक युवा पीढ़ी को महसूस करा देते हैं कि यह आपकी शिक्षा है और आपको इन शिक्षाओं पर चलना चाहिए, तो मुझे लगता है कि अगर उन्हें सही तरीके से पढ़ाया जाता है और उनका ख्याल रखना पड़ता है तो मजबूत आशा है कि उनमें से बड़ी संख्या बाद में अपने कामों से तौब: कर लेगी। मेरे निकट उन्हें मेरे जेल में नहीं रखना चाहिए। हो सकता है कि उन्हें अन्य कैदियों के साथ रखते हुए, आपको और अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। और वे उन कैदियों से बुरी चीजें सीख सकते हैं। और अगर वे सुनिश्चित करते हैं कि हम पूरी तरह से बदल गए हैं तो उन्हें अपने घरों में रहने का आज्ञा दे दें और समय समय पर उन की निगरानी करें ।

*** पत्रकार ने कहा कि स्वीडन में इस के विपरीत हो रहा है जब ये लोग वापस आते हैं, तो उन से ख़िलाफ कानूनी कार्रवाई की जाती है, क्योंकि आतंकवादियों से जुड़ना या संपर्क करना अवैध है। आप इसके बारे में क्या सोचते हैं?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "यदि कानून कहता है कि उन के ख़िलाफ कारवाई होनी चाहिए तो फिर ठीक है और यदि यह साबित होता है कि इन लोगों के कारण समस्याएं उत्पन्न हुई हैं और वे इन समस्याओं का हिस्सा हैं और वे स्वयं को कभी नहीं बदलते हैं, तो कानून के अनुसार उनके साथ व्यवहार किया जाना चाहिए।

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 30 August 2018 Issue No. 35

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

*** पत्रकार ने पूछा, इस समस्या के दौरान अहमदी जमाअत किस तरह भूमिका निभा सकती है?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : हम लंबे समय से अपनी भूमिका निभा रहे हैं। हम तो कहते हैं, वर्तमान दिनों में, जिहाद, जिसे अक्सर दुश्मन के ख़िलाफ तलवार और शक्ति के उपयोग के रूप में माना जाता है, स्थगित किया जाए। क्योंकि तलवार के जिहाद की आज्ञा केवल उस समय दी गई थी जब दुश्मन इस्लाम को नष्ट करने के लिए मुसलमानों के ख़िलाफ तलवार उठा रहे थे। वे कुछ मुसलमानों या कुछ मुस्लिमों के समूहों को खत्म नहीं करना चाहते थे, लेकिन वे पूरे धर्म को ही खत्म करना चाहते थे। लेकिन आज के युग में, हम किसी भी धार्मिक या ग़ैर-धार्मिक समूह नहीं देखते हैं जो इस्लाम के नाम को तलवार के भय से खत्म करने की कोशिश कर रहे हैं। यदि ये लोग इस्लाम के ख़िलाफ हैं, तो वे इस्लाम के ख़िलाफ मीडिया या अन्य स्रोतों के प्रोपगंडा करते हैं। अत: इस युग में, जिहाद यही है कि मीडिया, साहित्य और किताबों द्वारा इस्लाम विरोधियों की आपत्तियों का उत्तर दिया जाए। इस युग में ताकत के प्रयोग की आज्ञा नहीं हैं। जब दुश्मन के ख़िलाफ तलवार के युद्ध की सब से पहले आज्ञा दी गई थी, तो इस अनुमति के साथ विस्तृत निर्देश दिए गए थे। और इस आयत में यह भी उल्लेख किया गया है कि यदि आप ने दुश्मनों को जो मुसलमानों पर हमला करने के लिए तैयार थे उन का ताकत के साथ मुकाबला न किया तो आप को कोई कलीसा गिरजा मंदिर या इबादत की जगह नहीं सुरक्षित नहीं मिलेगी। क्योंकि ये दुश्मन केवल इस्लाम को ही नष्ट नहीं करना चाहते हैं, बल्कि वे धर्म के ख़िलाफ हैं और सभी धर्म खत्म हो जाएंगे।

*** पत्रकार ने कहा कि वे समझ रहे हैं कि वे इस तरह इस्लाम को फैला रहे हैं।**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : आप इस्लाम के संदेश को तलवार से नहीं बल्कि तब्लीग़ के माध्यम से फैला सकते हैं। यहां तक कि कुरआन करीम भी ख़ुद कहता है कि धर्म में कोई बलात नहीं है। अत: जब धर्म में बलात नहीं है तो इस्लाम को फैलाने के लिए बल का उपयोग की अनुमति कैसे दी जा सकती है?

* फिर पत्रकार ने पूछा कि स्टॉक हाम में आपका कार्यक्रम क्या है? क्या आप राजनेताओं से मिलेंगे?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : मेरा विचार है कि मुझे नहीं लगता कि मैं राजनेताओं से मिलूंगा, लेकिन स्टॉकहोम में एक कार्यक्रम आयोजित है। अगर कुछ राजनेता हमारे निमंत्रण को स्वीकार करते हैं, तो इस अवसर पर संक्षिप्त सी मुलाकात हो जाए। अन्यथा मेरा इरादा केवल मस्जिद के उद्घाटन तक है। और जमाअत के लोगों से मुलाकात करना था।

*** पत्रकार ने कहा यहां माल्मो में अपनी मस्जिद बनाने का उद्देश्य क्या था?**

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया , यहां माल्मों में अहमदी मुसलमानों के पास नियमित इबादत के लिए स्थान नहीं था, जहां वे जमा हो सकते और जमाअत के साथ नमाज़ें अदा कर सकते। लेकिन अब हमने यहां एक मस्जिद बनाई है। दिन में पांच नमाज़ें अदा करना हम पर फर्ज़ है। अत: इस मस्जिद का उद्देश्य भी यह है कि अहमदी जमाअत के सदस्य यहां जमा हों और जमाअत के साथ फर्ज़ नमाज़ों को अदा करें। इस के अतिरिक्त और भी उद्देश्य हैं। जैसे यहां एक बहुउद्देश्यीय हॉल बनाया गया है, जिसे आप सामुदायिक हॉल भी कह सकते हैं, जहां अहमदी युवा या वृद्ध लोग भी खेल सकते हैं। अपने जलसे कर सकते हैं और अपने अन्य आयोजनों को व्यवस्थित कर सकते हैं।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

जमाअत के लोग

इन दुआओं को बहुत अधिक पढ़ें।

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्दहुल्लाह तआला बेनस्लेहिल अज़ीज़ ने जलसा सालाना लंदन के पहले दिन 3 अगस्त 2018 को अपने उद्घाटन ख़िताब नें जमाअत के लोगों को बहुत अधिक दरूद शरीफ पढ़ने और नीचे लिखी दुआएं पढने की तहरीक फरमाई।

(1) اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى آلِ إِبْرَاهِيمَ وَعَلٰى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى إِبْرَاهِيمَ وعَلٰى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔

अनुवाद:: हे हमारे अल्लाह! तू मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आल (सन्तान) पर दरूद भेज जिस प्रकार तूने इब्राहीम पर और उस की आल पर दरूद भेजा। तू मुहम्मद और मुहम्मद की आल को बरकत प्रदान कर जिस प्रकार तूने इब्राहीम तथा इब्राहीम की आल को बरकत प्रदान की। तू बहुत अधिक सम्मान वाला तथा बुज़ुर्गी वाला है।

(2) رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ

(आले इम्रान 9)

अनुवाद:: हे हमारे रब्ब हमारे दिलों को टेढ़ा न होने दे इस के बाद कि तूने हमें हिदायत दे दी और हमें अपनी तरफ से रहमत प्रदान कर। निसन्देह तू ही बहुत अधिक प्रदान करने वाला है।

(3) رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَإِسْرَافَنَا فِيْ أَمْرِنَا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ

(आले इम्रान 148)

अनुवाद:: हे हमारे रब्ब हमारे गुनाह क्षमा कर दे और अपने मामला में हमारी ज़्यादती भी। और हमारे कदमों को मज़बूती प्रदान कर और हमें काफिर क़ौमों के विरुद्ध सहायता प्रदान कर।

(4) رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنْفُسَنَا ۖ وَإِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ

(अल्आराफ 24)

अनुवाद::हे हमारे रब्ब हम ने अपनी जानों पर अत्याचार किया और अगर तूने हमें माफ न किया और हम पर रहम न किया तो हम निसन्देह घाटा पाने वालों में से हो जाऐंगे।

(5) رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

(अल्बकर: 202)

अनुवाद:: हे हमारे रब्ब हमें दुनिया में भी अच्छाई प्रदान कर और आख़रत में भी अच्छाई प्रदान कर और हमें आग के आज़ाब से बचा।

(6) اَللّٰهُمَّ إِنَّا نَجْعَلُكَ فِيْ نُحُوْرِهِمْ وَنَعُوْذُبِكَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ

(अबू दाऊद किताबुल फज़ाइल)

अनुवाद:: हे अल्लाह हम तुझे उन के सीनों में करते हैं(अर्थात तेरा रौब तथा ख़ौफ उन के सीनों में भर जाए) और उन की बुराइयों से तेरी पनाह मांगते हैं।

(7) رَبِّ كُلُّ شَيْءٍ خَادِمُكَ رَبِّ فَاحْفَظْنِيْ وَانْصُرْنِيْ وَارْحَمْنِيْ

(इल्हामी दुआ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम)

अनुवाद:: हे मेरे रब्ब हर एक चीज़ तेरी सेवक है। हे मेरे रब्ब! शरारत करने वाले की शरारत से मेरी सुरक्षा कर और मेरी सहायता कर और मुझ पर रहम कर।

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad